फरवरी-२०२३ ◆ वर्ष ११ ◆ अंक १० ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक
फरवरी-२०२३

ऋषि की कर्मस्थली पर भव्य नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र, उदयपुर

श्रीमद्दयानन्द द्विजन्म शताब्दी के पुण्य अवसर पर द्वि वर्षीय कार्यक्रमों की शृंखला के अन्तर्गत आयोज्य

लोकार्पण समारोह

26 एवं 27 फरवरी 2023

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर–313001 (राज.)

₹१५ १३६

आप भी NMCC के अद्भुत प्रेरक स्वरुप के साक्षी बनें।

सफलता के 6 मूल मंत्र

पद्मभूषण
महाशय धर्मपाल जी
संस्थापक चेयरमैन, एम.डी.एच. (प्रा०) लि०

MDH मसाले

सेहत के रखवाले असली मसाले सच - सच

For More Information Visit us on :

mdhspicesofficial | mdhspicesofficial | mdhspicesofficial | SpicesMdh

www.mdhspices.com

SCAN FOR MDH ORIGINAL RECIPES

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल
डॉ. महावीर मीमाँसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक
अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक
भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग (ग्राफिक्स डिजाईनर)
नवनीत आर्य (मो. 9314535379)

व्यवस्थापक
भँवर लाल गर्ग

सहयोग ◆	भारत	विदेश
संरक्षक	- 11000 रु.	$ 1250
आजीवन	- 1500 रु.	$ 300
पंचवर्षीय	- 600 रु.	$ 125
वार्षिक	- 150 रु.	$ 30
एक प्रति	- 15 रु.	$ 10

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच दिल्ली गेट, उदयपुर
खाता संख्या : 310102010041518
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३१२३
पौष कृष्ण प्रथमा
विक्रम संवत्
२०७९
दयानन्दाब्द
१९८

February - 2023

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नही है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)
कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन
5000 रु.
अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	3000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000 रु.

समाचार ३०

०४ NMCC के आकर्षण
०५ How you Can help us.
०६ वेद सुधा
०८ सत्यार्थ मित्र बनें
०९ धर्म ही इस दुनिया को ......
२१ अग्निहोत्र (हवन)
२४ गृहस्थ आश्रम मृत्युपर्यन्त नहीं है।
२६ क्रान्तिकारी बुधु भगत
२७ कथा सरित- शिवरात्रि बनी बोधरात्रि
२८ सत्यार्थप्रकाश पहेली- ११/२२
२९ स्वास्थ्य- अमस्थावलेह

स्वामी: श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर
वर्ष - ११ अंक - १०
मुद्रण: द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001
(0294) 4017298, 09314535379, 7976271159
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर–313001 से प्रकाशित, सम्पादक–अशोक कुमार आर्य

NMCC के आकर्षण

बाह्य स्वरूप

1. अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा के Life size Statue चार, मुख्य द्वारों पर।
2. आठ वेद मंत्रों के महर्षिकृत भाष्य के भावों का विश्व में प्रथम बार दृश्यात्मक एफआरपी म्यूरल आर्ट द्वारा प्रदर्शन।
3. सम्पूर्ण महल के बाह्य भाग पर जोधपुर पत्थर पर नयनाभिराम नक्काशी।

(अ) मधु एवं हरि वार्ष्णेय प्रेरणा कक्ष

1. **राष्ट्रोन्नायक वीथिका-** भारत को विभिन्न क्षेत्रों में अवदान प्रदान कर गौरवान्वित करने वाले महापुरुषों के, तीन विधाओं यथा एफआरपी रिलीफ, पेन्टिंग तथा फोटो में चित्रों द्वारा इसे सेल्फी प्वाइन्ट के रूप में प्रस्तुत करना ताकि प्रत्येक आगन्तुक के फोन में स्वयं के चित्र की पृष्ठभूमि में इन श्रद्धा के योग्य महामनाओं के चित्र भी हों, जो उसे प्रेरणा देते रहें।
2. **पंचमहायज्ञ वीथिका-** महर्षि दयानन्द ने प्रत्येक मुनुष्य को प्रतिदिन 5 कार्य अवश्यमेव करने के निर्देश दिए हैं जिन्हें महायज्ञ कहा है। जो प्रत्येक व्यक्ति की निजी, पारिवारिक, राष्ट्रीय, वैश्विक उन्नति, पर्यावरण सन्तुलन व सहअस्तित्व के लिए अत्यावश्यक हैं।
3. **बुक स्टॉल-** पर्यटकगण जो, अधिकांश में गैर आर्यसमाजी ही होते हैं, यहाँ के पुस्तक विक्रय केन्द्र से लाखों रुपयों का सत्साहित्य क्रय करके ले जाते हैं। अब पुराने स्टॉल को हटाकर सुन्दर पिरामिड के आकार का विक्रय केन्द्र निर्मित किया है। तथा दर्शक बैठकर साहित्य पढ़ भी सकें, यह व्यवस्था भी की गई है।
4. **सत्यार्थ प्रकाश चित्र-** रिसेप्शन स्थल की पृष्ठभूमि में ऑयल पेन्ट से चित्रित मनमोहक सत्यार्थ प्रकाश चित्र लगाया गया है जिसकी छटा देखते ही बनती है।

(ब) घनश्याम सिंह कृष्णावत अतिथिशाला- अतिथिशाला के नाम पर पहले जीर्ण–शीर्ण कमरे थे। जिनके दरवाजे भी 5 फिट के थे। अतएव रिनोवेशन का तात्पर्य पूर्ण स्ट्रक्चरल परिवर्तन भी था। इस सब को सम्भव बनाया श्री वीरमदेव जी कृष्णावत एवं श्री यदुराजसिंह जी कृष्णावत बन्धुओं ने। इन्होंने अपने पूज्य पिताजी की स्मृति में इस अतिथिशाला को मजबूत तथा सुन्दर रूप प्रदान किया, दूसरे शब्दों में यह भी कह सकते हैं कि कायाकल्प कर दिया।

(स) दीनदयाल-सुरेशचन्द्र आर्य संस्कार वीथिका- उत्तम संस्कार उत्तम मनुष्य का निर्माण करते हैं। अतः फाइबर रेजिन के बने पुतलों के माध्यम से सभी सोलह संस्कारों को इनके ऑडियो के साथ प्रदर्शित किया गया है। ये सारा दृश्य अत्यन्त जीवन्त आभासित होता है। दृश्य–श्रव्य की विधि इसे और प्रभावशाली बनाती है।

(द) सुरेशचन्द्र-दीनदयाल आर्य चलचित्रालय- 34 सीटों की क्षमता वाले एक अत्यन्त सुन्दर थ्रीडी थियेटर का निर्माण किया गया है। जिसमें अत्यन्त उच्च क्वालिटी के प्रोजेक्टर व साउण्ड सिस्टम लगाये गये हैं। प्ररेणादायक फिल्मों का प्रदर्शन यहाँ किया जाता है।

(य) भारत गौरव दर्शन- देश की स्वतंत्रता के लिए अपना लहू बहाने वाले गुमनामी के अंधेरे में खो गये 365 क्रान्तिवीरों के जीवन पर आधारित दो मिनट के वीडियो, जो आने वाली पीढ़ियों को अपने उन महान् योद्धाओं की जानकारी देंगे, जिन्होंने देश को स्वतंत्रता दिलायी।

(र) आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा- वेद से लेकर महर्षि दयानन्द की जीवनी पर्यन्त शताधिक चित्रों से युक्त ये भव्य आर्ट गैलेरी प्राचीन भारतीय संस्कृति, वैदिक मूल्यों और महर्षि के जीवन दर्शन को समझाने में अत्यन्त प्रभावशाली भूमिका निभा रही है।

कृपया ध्यान दें–

1. निर्माण कार्य के दौरान भी हजारों पर्यटक जो आते थे वे मन्त्रमुग्ध हो जाते थे। अब जब सम्पूर्ण प्रकल्प बन चुका है, तो इसके नयनाभिराम स्वरूप को आप अवश्य पसन्द करेंगे ऐसा विश्वास है। **अतः लोकार्पण उत्सव पर अवश्य पधारें।**
2. फरवरी की रात्रि में हलकी सर्दी हो सकती है अतः कृपया गर्म वस्त्र व बिस्तर साथ लावें।
3. **अपने आगमन सम्बन्धी सूचना अग्रिम ही अवश्य भेजें।** ताकि आपके आवास तथा भोजन की सुव्यवस्था हो सके।
4. जो सज्जन होटल जैसी विशिष्ट आवास व्यवस्था चाहते हों वे हमें शीघ्र लिखें ताकि होटलों में उनका आरक्षण कराया जा सके। यह व्यवस्था सशुल्क होगी। सम्पर्क : 0294–4017298, 9314235101, 9314535379, 7976271159
5. श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास को दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80G के अन्तर्गत करमुक्त है। **अपना छोटा-बड़ा अर्थ-सहयोग अवश्य दें।**

चैक या ड्राफ्ट श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर के नाम से ही भेजें।

How you Can help us.

सभी मित्रों को सादर नमस्ते!

नवलखा महल, उदयपुर सत्यार्थ प्रकाश की रचना स्थली है, इसको सुन्दर एवं प्रेरक सांस्कृतिक केन्द्र बनाकर यहाँ से अनेक प्रकार से वैदिक संस्कृति का प्रचार किया जा रहा है, जिसमें आप सबका अनेक रूप में आशीर्वाद भी प्राप्त हो रहा है।

आपका सहयोग सदैव अपेक्षित है जिसके अभाव में यह प्रचार की गतिविधियाँ सम्भव नहीं हैं। **अनेक मित्र पूछते हैं कि हम किस प्रकार सहयोगी बन सकते हैं सो निवेदन है।**

आप किस प्रकार सहयोग कर सकते हैं –

1. आजकल इण्टरनेट का जमाना है। लोग जब भी उदयपुर आएँ, नवलखा महल अवश्य पधारें, इस हेतु इन्टरनेट पर प्रचार आवश्यक है। **इसके लिए गूगल पर जाकर इसे अपनी समीक्षा तथा रेटिंग देने का भी कष्ट करें। आप Google Page के URL में केवल Navlakha Mahal, Udaipur लिखेंगे तो यहाँ का पेज खुल जायेगा।**
2. यहाँ दर्शनार्थ आने वाले सज्जन दर्शक पंजिका में अपनी राय नीचे लिख अपना फोन नम्बर अवश्य दें और अगर **दो मिनट का समय देकर अपनी बाइट देने का श्रम करें तो अति उत्तम होगा।**
3. न्यास से एक अत्यन्त उत्तम **पत्रिका सत्यार्थ सौरभ** का प्रकाशन गत 11 वर्षों से हो रहा है जिसकी सम्पूर्ण विश्व में प्रशंसा होती है। मात्र ₹1500 (पन्द्रह सौ) देकर इस के आजीवन सदस्य बनें अथवा ₹150 (एक सौ पचास) देकर वार्षिक सदस्य बने ऐसी प्रार्थना है।
4. **सत्यार्थ सौरभ के संरक्षक बनकर इसे सम्बल प्रदान करें** इसके लिए मात्र ₹11000 (ग्यारह हजार) एकमुश्त देने की कृपा करें।
5. न्यास की समस्त गतिविधियों को सम्बल देने के लिए **सत्यार्थमित्र बनकर मात्र ₹5100 (इकावन सौ) प्रति वर्ष देने का संकल्प लें।** आपका एक छोटा सा योगदान बहुत बड़ा कार्य करके दिखायेगा।
6. न्यास के साहित्य विक्रय केन्द्र से सत्यार्थ प्रकाश एवं अन्य वैदिक साहित्य क्रय करें अथवा मगावें और अपने परिवार में सुसंस्कारों को प्रवेश करायें।
7. हमारे द्वारा सम्प्रेषित सभी वीडियोज एवं प्रचार सामग्री को, हमारे निवेदन को, **अधिकाधिक मित्रों तक शेयर करने का श्रम करें।**
8. न्यास को सम्बल प्रदान करने के लिए **छोटी बड़ी कितनी भी राशि का अनुदान देखकर कृतार्थ करें।**

नवीन परियोजनाओं में (अ) नवलखा महल का बाहरी भाग वेद के थीम पर आधारित और (ब) स्वागत कक्ष पंच महायज्ञ के थीम पर आधारित बनाया जा रहा है यहीं पर (स) 'वॉल आफ फेम' बनाई जा रही है जिसमें भारत राष्ट्र निर्माताओं का दर्शन होगा (द) एक एलईडी पर 365 गुमनाम शहीदों को दिखाया जायेगा।

ये सभी योजनाएँ अद्‌भुत चित्ताकर्षक और प्रेरक होंगी। इसमें अपनी क्षमता के अनुसार छोटा बड़ा कैसा भी अर्थ अनुदान देकर वैदिक धर्म के प्रचार में सहयोगी बनें।

आप प्रान्त में अपना विशिष्ट प्रभाव क्षेत्र रखने वाले तथा स्वयं में समर्थ आर्य श्रेष्ठ हैं। यदि आपको लग रहा हो कि न्यास अभिनव प्रयोगों के माध्यम से जन सामान्य में वैदिक संस्कृति से संपृक्त मूल्यों को प्रसारित करने में प्रभावी कार्य कर रहा है, तो जैसा आपको उचित लगे, तदनुरूप योगदान प्रदान करने का श्रम करें।

न्यास को प्रदत्त अर्थ सहयोग आयकर अधिनियम की धारा 80G के अन्तर्गत करमुक्त है। **बैंक विवरण इसी अंक के पृष्ठ संख्या 3 पर उपलब्ध है।**

ओ३म्

वेद सुधा

सिधाई सुखदाई है

यं यज्ञं नयथा नर आदित्या ऋजुना पथा।
प्र वः स धीतये नशत्।। - ऋग्वेद १/४१/५

आदित्याः - सूर्य (समान तेजस्वी), **नरः**- नेताओ!, **यं यज्ञम्**- जिस यज्ञ को, **ऋजुना पथा** - सरल मार्ग से **नयथा=नयथ**- ले-चलते हो, चलाते हो। **सः वः** - वह तुम्हें, **धीतये**- धारण करने के लिए, **प्रनशत** - उत्तम रीति से से प्राप्त होता है।

व्याख्या

पिछले मन्त्र में आदित्यों को सम्बोधन किया गया है। कोई यह न समझ ले कि वेद जड़ सूर्यों को सम्बोधन कर रहा है, इसलिए इस मन्त्र में आदित्यों को विशेषण बनाकर 'नरः' को सम्बोध्य बनाया है। 'नरः' का अर्थ है- हे मनुष्यो! हे नेताओ!

इस मन्त्र में वेद ने जहाँ जड़पूजा का निवारण किया है, वहाँ शब्दों की यौगिकता का भी संकेत कर दिया है। नाम पद या तो रूढ़ होते है या योगरूढ़ और या यौगिक। अर्थादि का विचार किये बिना किसी पदार्थ का जो नाम रखा जाए, वह नाम रूढ़ कहलाता है, जैसे किसी कंगाल का नाम 'धनपति' हो। जिन नामों में प्रकृति-प्रत्यय और उनके अन्वित अर्थ की घटना हो, उन्हें यौगिक कहते हैं। प्रकृति-प्रत्यय-विचार भी हो, किन्तु किसी एक ही पदार्थ का वह नाम हो, वह योगरूढ़ कहलाता है, जैसे नीरज। नीरज का अर्थ है जल में उत्पन्न होने वाला, किन्तु जल में उत्पन्न होने वाले प्रत्येक पदार्थ को नीरज नहीं कहते, वरन् केवल कमल को नीरज कहते हैं।

वेद में यौगिक-योगरूढ़ शब्द होते हैं, रूढ़ नहीं। वेदार्थ-विचार में इस सिद्धान्त को सदा सामने रखना चाहिए।

नर (नेता) कैसा होना चाहिए? जो आदित्य (अदिति का पुत्र) हो, अदिति का उपासक हो, अदिति का सम्बन्धी हो। अदिति के अर्थ अनेक हैं- मुख्यार्थ है अखण्डशक्ति। अखण्डशक्ति से जिसका सम्बन्ध हो, वह नर (नेता) बनने का अधिकारी है। ऐसे आदित्य नर जिस यज्ञ को चलाएँगे, उसको ऋतु मार्ग से चलाएँगे।

आदित्य नरों का भौतिक आदर्श है सूर्य। सूर्य संसार-यज्ञ का एक प्रधान ऋत्विक् है। मनुष्य आदित्य में मानव-समाजरूपी यज्ञ के मुख्य ऋत्विक् बने और उसे चलाएँ ऋतु मार्ग से। मनुष्य में अज्ञान के कारण कुटिलता आ गई है। उसके कारण मनुष्य यज्ञच्युत हो रहा है।

मनुष्य की भलाई सिधाई में है। वेद (यजुर्वेद ४०/१६) में इसी कारण भगवान् से प्रार्थना है-

युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनः- कुटिल पाप को हमसे पृथक् कीजिए!

इस मन्त्र में पाप को कुटिल का विशेषण दिया गया है। यह अत्यन्त उचित है। प्रत्येक पाप में कुटिलता होती है। इसी कारण (यजुर्वेद ४०/१६) में भगवान् से सुमार्ग पर चलाने की याचना की गई है-

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्।

सबको सुमार्ग दिखानेवाले प्रभो! ऐश्वर्य के लिए हमें सुमार्ग से ले-चल।

ऋजु मार्ग ही सुपथ होता है। इसलिए प्रकृत मन्त्र में आदित्यों को कहा गया है-

नयथा..... ऋजुना पथा।

इससे मिलाकर पढ़ो-

अग्ने नय सुपथा= हे अग्ने! हमें सुपथ से ले-चल।

वेद में एक जगह ऐसी प्रार्थना है-

स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्याऽन्द्रमसाविव।
पुनर्ददताघ्नता जानता सं गमेमहि।।

- ऋग्वेद ५/५१/१५

सूर्य और चन्द्र की भाँति हम स्वस्तिमार्ग से चलें, दानशील, अहिंसक (मृदु, कोमल, सरल, प्रीतिमय) ज्ञानी का बार-बार हम संग करें।

स्वस्ति (सु-अस्ति=अच्छी स्थिति- मर्यादावाला) पथ कैसा हो सकता है? इसका उत्तर दृष्टान्त से दिया है। सूर्य और चन्द्र की भाँति, अर्थात् सूर्य और चन्द्र का मार्ग स्वस्तिमार्ग है। सूर्य-चन्द्र अपनी-अपनी मर्यादा में चल रहे हैं। अपना कोई स्वार्थ नहीं हैं। निरन्तर ताप, प्रकाश एवं शैत्यादि देते हुए प्राणी एवं अप्राणी-जगत् के जीवन के हेतु बन रहे हैं। सर्वोत्कृष्ट स्वस्तिपन्थ यह है कि मनुष्य निज स्वार्थ त्यागकर परहितरत हो जाए। परहितरति के भावों को ग्रहण करने के लिए उसे ज्ञानी का संग करना चाहिए। ज्ञानी भी कैसा हो, जो दाता हो, प्रतिग्रहिता न हो, किसी की हिंसा न करता हो, किसी का अधिकार न छीनता हो। ऐसे ज्ञानी के संग से सूर्य-चन्द्र समान स्वस्ति पन्था का ज्ञान होगा और उससे मानव का परम कल्याण होगा।

सुपथ, ऋतुपथ और स्वस्ति-पन्था एक ही वस्तु है।

ऋजु मार्ग से यज्ञ संचालन का फल बतलाया-

प्र वः स धीतये नशत्।

वह तुम्हें धारण के लिए उत्तमता से प्राप्त होता है।

मीमांसकों के यहाँ यज्ञ का अर्थ धर्म है। धर्म का अर्थ है-

धारणाद् धर्मः।

जिसके अनुष्ठान से इस लोक और परलोक में जीवन बना रहे, वह धर्म है।

जीवन यज्ञ के आश्रय से चल सकता है। त्याग और संगतीकरण के बिना जीवन-यात्रा असम्भव है। इसलिए यज्ञ मुख्य धर्म है। वेद (यजुर्वेद ३१/१६) में भी कहा है-

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।

निष्काम ज्ञानी यज्ञ के द्वारा यज्ञ= प्रभु का पूजन करते हैं, वह मुख्य धर्म है।

देवपूजा, संगति और दान= अर्थात् श्रेष्ठतम कर्मों से ही प्रभु की यथार्थ पूजा होती है और वह मुख्य धर्म है। उस धर्म का पालन सरल मार्ग से हो, तो सचमुच वह धारण का कारण बन जाए।

मनुष्य का लक्ष्य है- देव बनना। देव बनने के लिए प्रभु को यज्ञ- सबको यथायोग्य संस्कृत करनेवाला, उचित का उचित रीति से संगति करानेवाला, तथा यथायोग्य दाता- समझे। उसकी पूजा की सामग्री का नाम यज्ञ है, अर्थात् त्यागपूर्वक, निष्कामभाव से, कर्तव्य समझकर उसकी भाँति देवपूजा, संगतिकरण तथा दान से उसका भजन-पूजन हो सकता है, अन्यथा नहीं। यही ऋजुमार्ग है, यही मुख्य धर्म है।

संकलन कर्त्ता एवं भाष्यकार- स्वामी वेदानन्द तीर्थ
साभार- स्वाध्याय-सन्दीप

सत्यार्थ मित्र बनें

न्यास के कार्यों को गति प्रदान करने के लिए 5100 रु. (पाँच हजार एक सौ) वार्षिक का सहयोग प्रदान करें।

आपका मात्र ५१०० रुपये वार्षिक का सहयोग न्यास के कार्य को अद्वितीय गति प्रदान कर सकता है।

हमारे अत्यन्त आत्मीय बन्धुजन!

इस अपील को मेरी व्यक्तिगत अपील कहिए अथवा न्यास की अपील समझिए। यह आप तक पहुँचे और आपकी आत्मीयता हमें प्राप्त हो, इसी नाते हम प्रथम बार अर्थ सहयोग का निवेदन कर रहे हैं।

आपको यह जानकारी होगी ही कि नवीन, आकर्षक प्रकल्पों का निर्माण कर न्यास सहस्रों लोगों तक वैदिक संस्कृति के मूल तत्त्वों को अग्रप्रसारित कर रहा है। सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर द्वारा आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा व संस्कार वीथिका के माध्यम से मानव निर्माण की पूरी योजना आगन्तुकों के सामने रखी जा रही है। इस क्रम में मानों महर्षिवर की संस्कार विधि मूर्तरूप में चित्रित हो गयी है।

वहीं उच्चतम गुणवत्ता के 3D थियेटर का निर्माण कर महापुरुषों के जीवन–चरित्र का दिग्दर्शन भी कराया जा रहा है। यहाँ यह अंकित करना आवश्यक है कि मुक्त हस्त से दिए हुए उदार अर्थ के सहयोग से भव्य संस्कार वीथिका परिसर व थियेटर का निर्माण माननीय सुरेश चन्द्र जी आर्य; अहमदाबाद और माननीय दीनदयाल जी गुप्त; कोलकाता के पवित्र सहयोग से हो पाया है एवं संस्कारों का निर्माण आर्यजनों के सामूहिक सहयोग से एकत्रित धन से हुआ है। परन्तु इनको गति देने के लिए, वर्ष में सारे प्रकल्प 365 दिन गतिशील रहें, इसके लिए आवश्यक है कि कुछ लोग आगे आएँ और प्रतिवर्ष अपना योगदान दें, इसीलिए आपसे यह निवेदन कर रहा हूँ। **मैं व्यक्तिगत रुप से अनुगृहीत हूँगा अगर आप मात्र 5100 सौ रुपये प्रतिवर्ष देने का संकल्प लेंगे।** न्यास का एकाउन्ट नम्बर भी नीचे अंकित है। न्यास को प्रदत्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80G के अन्तर्गत कर मुक्त है।

हमें आशा ही नहीं विश्वास है कि आप हमारी प्रार्थना को स्वीकार कर 5100 रुपये वार्षिक का यह अर्थ सहयोग प्रदान करने की कृपा करेंगे। **निश्चित मानिये आपके सहयोग से जो ऊर्जा और गति हमें मिलेगी वह लाखों लोगों तक वैदिक संस्कृति के उदात्त मूल्यों को सम्प्रेषित करने में मील का पत्थर साबित होगी। सहयोग हेतु राशि जमा करने का विवरण कृपया पृष्ठ संख्या 1 पर देखें एवं राशि जमा करा कृपया सूचित करें।**

निवेदक– अशोक आर्य, अध्यक्ष–न्यास

डॉ. दीनदयाल शर्मा
उदयपुर

श्री महेश चंशीधर अग्रवाल
मुम्बई

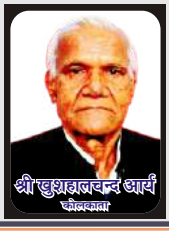
श्री खुशहालचन्द आर्य
कोलकाता

डॉ. रोचना भारती
नासिक

श्री उदयलाल
उदयपुर

जिन महानुभावों ने हमारे एक आग्रह पर न्यास को सम्बल प्रदान करने हेतु 5100 रु. (इक्कावन सौ) प्रतिवर्ष देकर सत्यार्थ मित्र बनना स्वीकार किया उनके चित्र को यहाँ हृदय से धन्यवाद प्रेषित करते हुए दे रहे हैं।

(स्मृतिशेष) श्री सुधाकर जी पीयूष

स जीवति यशो यस्य कीर्तिर्यस्य स जीवति।

सुधाकर-उवाच

जीव नहीं मरता है किन्तु, यह शरीर ही भस्म हुआ।
कर्तव्यों को पूरा करके, मैं तो अपनी राह चला।
सत्कर्मों की ज्योति जलाने, मैं तो फिर से आऊँगा,
मोक्ष प्राप्ति तक कर्म निरन्तर, ईश नियम अपनाऊँगा।
जर्जर इस शरीर से अब मैं, क्या कुछ ही कर पाऊँगा।
नव जीवन की आस लिए मैं, प्रभु के द्वारे जाऊँगा।
निष्काम कर्म का व्रत लेकर, फिर मैं कर्म क्षेत्र में आऊँगा।
सारा जीवन प्रभु के अर्पित, मोक्ष मार्ग को पाऊँगा।।

आर्य जगत् के प्रसिद्ध भजनोपदेशक एवं स्वतंत्रता सेनानी पण्डित पन्ना लाल पीयूष के कनिष्ठ पुत्र एवं इस न्यास को सर्वात्मना समर्पित भाई सुधाकर पीयूष अनायास ही हम सबको छोड़कर चले गए। ऐसा प्रतीत होता है कि हमारा एक हाथ टूट गया हो। परन्तु विधाता के नियम अटल हैं उनके समक्ष नतमस्तक होना ही पड़ता है। न्यास व सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि। –अशोक आर्य

आत्म निवेदन

धर्म ही इस दुनिया को स्वर्ग बना सकता है

आज के अखबार में भारत के एक जाने माने व्यक्ति श्री जावेद अख्तर का एक भाषण जो कि उन्होंने १६ वर्ष की उम्र में कॉलेज में दिया था, छपा है। **जिसमें उनका मानना है कि धर्म इस दुनिया में कभी भी स्वर्ग नहीं बना सकता।** इस मान्यता से हम बिल्कुल सहमत नहीं हैं। बल्कि हमारा मानना यह है की जावेद अख्तर जी की आज भी अगर यही धारणा है तो वह सत्य के विरुद्ध है, भ्रम से उत्पन्न है। उक्त भाषण तो उन्होंने वाद-विवाद प्रतियोगिता में दिया था जिसमें प्रायः पक्ष और विपक्ष में भाषण दिए जाते हैं, तो उस दृष्टि से उन्होंने अपने तर्कों को गढ़ा हो तो वह एक अलग बात है परन्तु यदि वास्तव में उनकी मान्यता यह है तो ऐसी ही मान्यताएँ रखने वाले अन्य विद्वानों की तरह वे भी गलत हैं। प्रत्यक्षतः उन्होंने धर्म और मजहब को एक मान लिया है और मजहब के द्वारा दुनिया में जितनी अशान्ति फैलाई जा रही है और फैलाई गई है उन सबको ही धर्म की फलश्री उन्होंने मान लिया है।

उनके मुख्य तर्क कुछ इस प्रकार हैं- 'अगर धर्म इस दुनिया को स्वर्ग बना सकता है तो उसने एक स्वर्ग इस दुनिया से परे क्यों बनाया? यह ठीक है कि मजहबी ग्रन्थों में स्वर्ग और जन्नत की कल्पना की गई है एक ऐसे स्थल के रूप में, जो इस धरती से परे कहीं पर है। और इन मजहबों पर विश्वास लाने वाले और इनकी शिक्षाओं को प्रचारित-प्रसारित करने वाले और इन मजहबों में जिन मसीहाओं और पैगम्बरों का वर्णन किया है उनके लिए, उनका भक्त बनाने के लिए, अन्य सभी को किसी भी प्रकार से, चाहे खून बहा करके ही क्यों ना हो, इन भक्तों का उनका अनुयाई बनाना ही परम कर्तव्य है और ऐसा ही करने वाले को जन्नत या स्वर्ग प्राप्त होगा। तो इस दृष्टि से जावेद बिल्कुल सही हैं कि अगर उक्त प्रकार के मजहबी मान्यताओं को धर्म मान लिया जाएगा तो फिर धर्म निश्चित ही दुनिया में खून बहाने की मिसाल कायम करने के कारण अपनाने योग्य नहीं है।

जावेद लिखते हैं कि अगर धर्म की राह में बहा हुआ खून जमा किया जाए तो उसमें दुनिया के तमाम मन्दिर, मस्जिद और गिरिजा डूब जाएँगे। इस वक्तव्य में धर्म शब्द के स्थान पर मजहब रख देने पर ही जावेद सही कहे जा सकते हैं। यह सोच फिर से मजहबों को धर्म समझने के कारण है। मजहबी इतिहास खूंरेज है, इसमें कोई दो राय नहीं। क्रूसेड की भयानकता किसे ज्ञात नहीं है? मोहम्मदी तलवार ने किस प्रकार मारकाट मचाई, इसे कैसे भूला जा सकता है। और आज भी ऐसा हो रहा है।

बोको हराम, आई एस आई एस, तालिबान प्रत्यक्ष रूप से विश्वशान्ति के लिए चुनौती है। परन्तु यह सब धर्म का प्रचार नहीं कर रहे, बल्कि व्यक्तिगत मान्यताओं को धर्म के नाम पर लोगों के ऊपर जबरदस्ती थोपने का प्रयास कर रहे हैं। अतः मजहब को धर्म मानने के कारण यह सब भ्रान्ति उत्पन्न होती है, यह स्पष्ट है।

धर्म तो मनुष्य मात्र के कल्याण के लिए है, उनके अन्दर उदात्त मानवीय मूल्यों के सृजन के लिए है। इसी कारण भारतीय मनीषा ने जिन पुरुषार्थ चतुष्टय का वर्णन किया है वहाँ अर्थ, काम और मोक्ष सबको धर्म के अधीन रखा है अर्थात् अर्थ की प्राप्ति हो, पर धर्म के मार्ग से हो अर्थात् किसी अन्य का हक छीनकर अथवा किसी को कष्ट पहुँचाकर न हो। काम की प्राप्ति हो वह भी धर्म के आधार पर ही हो, धर्म के द्वारा ही मर्यादित रूप में हो। और जहाँ तक मोक्ष की बात है वह भी धर्म तत्व को जीवन में धारण किए बिना सम्भव नहीं ।

यहाँ यह भी समझ लेना चाहिए कि **ऐसा कोई लोक विशेष नहीं है जिसे स्वर्ग अथवा जन्नत अथवा अन्य ऐसे ही किसी नाम से अभिहित किया जाए** और उसमें उन-उन मान्यताओं को मानने वाले व्यक्तियों को ही प्रवेश मिलेगा अन्य को नहीं, ये सब मान्यताएँ काल्पनिक हैं। स्वर्ग और नर्क दोनों इसी धरती पर हैं। **महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनुसार सुख विशेष का नाम स्वर्ग है और दुःख विशेष का नाम नर्क है।** सुख और दुःख दोनों इसी धरती पर प्राप्त होते हैं।

देखिये उस बालक की ओर। जिसने अभी-अभी अपनी आँखें खोली हैं और पता चलता है कि कष्टकारी असाध्य बीमारी से ग्रसित हो अपार कष्ट झेल रहा है। माता-पिता के दुःख का भी अन्त नहीं। यह सब अनायास नहीं। पूर्व जन्म में कृत पापों का दुःख रूप फल है। क्या यह साक्षात् नर्क नहीं है? लोग धर्म के मार्ग पर चलते हुए आत्मा की उन्नति करते हुए, प्रभु के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं, वे सुख विशेष को प्राप्त होते हैं। यही स्वर्ग की प्राप्ति है। धर्म किस प्रकार से शान्ति की स्थापना कर सकता है इसे समझने के लिए सबसे पहले धर्म की परिभाषा समझनी चाहिए। मनु महाराज ने लिखा है

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्॥ - मनुस्मृति ६/९२

जो भी व्यक्ति धर्म की आलोचना करता है वह यह बताएँ कि उक्त दस लक्षणों में से कौन सा ऐसा लक्षण है कौन सा ऐसा गुण है जो अनुचित है और व्यक्ति के स्वयं के लिए, परिवार के लिए, समाज वा राष्ट्र के लिए घातक है? स्पष्ट है एक भी नहीं। जिस दिन उक्त दस लक्षणों को व्यक्ति अपने जीवन में धारण करेगा इनके अनुसार अपने जीवन को चलाने में सफल हो जाएगा उस दिन वह स्वयं भी सुख विशेष प्राप्त करेगा और विश्वशान्ति में भी अपना अमूल्य योगदान दे सकेगा।

भारतीय मनीषा का मानना है कि धर्म की तो रक्षा करनी चाहिए क्योंकि रक्षित धर्म ही रक्षा करने वाले की रक्षा कर सकता है। महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के छठे समुल्लास में मनु महाराज को उद्धृत करते हुए कहा है-

धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः।
तस्माद्धर्मो न हन्तव्यो मा नो धर्मो हतोऽवधीत्॥ - मनुस्मृति ८/१५

मरा हुआ धर्म मारने वाले का नाश, और रक्षित किया हुआ धर्म रक्षक की रक्षा करता है इसलिए धर्म का हनन कभी न करना, इस डर से कि मारा हुआ धर्म कभी हमको न मार डाले। (स. प्र. षष्ठ समु. पृ. १६८)

कौरवों की सभा में महाराज धृतराष्ट्र, भीष्म, द्रोण जैसे लोग बैठे थे परन्तु धर्म की हत्या वहाँ द्रौपदी के अपमान के रूप में की गई इसका क्या परिणाम हुआ सम्पूर्ण विनाश। इसीलिए कहा गया कि धर्म की रक्षा करनी चाहिए और धर्म की रक्षा में अगर प्रत्यक्ष हानि होती है तो भी कोई हर्ज नहीं, क्योंकि आगे चलकर यही धर्म विश्व में शान्ति का स्थापक होगा। प्रत्येक मनुष्य इसके आश्रय से ही अभ्युदय और निःश्रेयस की प्राप्ति कर सकेगा। परन्तु बार-बार यह समझना आवश्यक है कि धर्म मजहब नहीं है। धर्म सार्वभौमिक है, मनुष्य मात्र के भले के लिए है। बल्कि कहना चाहिए प्राणीमात्र के भले के लिए है। जबकि मजहब एक ऐसा जुनून है जो एक वर्ग विशेष के उत्थान के लिए है। वह उस वर्ग से इतर लोगों को ना कोई सम्मान देता है ना अस्मिता और न जीने का अधिकार देता है। धर्म को भारतीय मनीषा ने अत्यन्त सरलता से प्रतिपादित करने का प्रयास किया है।

आचारः परमो धर्मः श्रुत्युक्तः स्मार्त एव च।
तस्मादस्मिन्सदा युक्तो नित्यं स्यादात्मवान्द्विजः॥

(श्रुत्युक्तः च स्मार्त एव) वेदों में कहा हुआ और स्मृतियों में भी कहा हुआ जो आचारः आचरण है परमः धर्मः वही सर्वश्रेष्ठ धर्म है (तस्मात्) इसीलिए आत्मवान् द्विजः आत्मोन्नति चाहने वाले द्विज को चाहिए कि वह (अस्मिन्) इस श्रेष्ठाचरण में (सदा नित्यं युक्तः स्यात्) सदा निरन्तर प्रयत्नशील रहे।

उपरोक्त श्लोक देकर स्वामी जी ने निम्न अर्थ दिया है- 'कहने-सुनने-सुनाने, पढ़ने-पढ़ाने का फल यह है कि जो वेद और वेदानुकूल स्मृतियों में प्रतिपादित धर्म का आचरण करना। इसलिये धर्माचार में सदा युक्त रहे।' (स. प्र. तृतीय समु.)

'जो सत्य-भाषणादि कर्मों का आचरण करना है वही वेद और स्मृति में कहा हुआ आचार है।' (स. प्र. दशम समु.)

यहाँ सदाचार को धर्म अर्थात् धारण करने योग्य माना है। अब आप स्वयं सोच सकते हैं की संसार का प्रत्येक व्यक्ति सदाचार का पालन करेगा तो फिर समस्त विषमताओं की खाई अपने आप मिट जाएगी यही धर्म का सही अभिप्राय है।

इसीलिए प्रत्येक व्यक्ति, प्रत्येक समाज धर्म का पालन करे, यही सभी लोगों के लिए श्रेयस्कर है। सुख-शान्ति की स्थापना केवल और केवल वहीं हो सकती है जहाँ धर्म का साम्राज्य है। धर्म ही स्वार्थ से परे हटकर औरों के लिए, प्राणिमात्र के कल्याण के लिए सोचने और कुछ करने के भाव उत्पन्न करता है। अन्याय को दूर कर न्याय की स्थापना की भावना के साथ न्यायपूर्वक ही अर्जन करना और उस अर्जित किए को अन्यों की भलाई में प्रयुक्त करना

धर्म ही सिखाता है। बहुत आवश्यक है कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं को सीमित रखने का प्रयास करे। तभी संसाधनों का वितरण प्रत्येक व्यक्ति तक हो सकता है यह भावना भी धार्मिक व्यक्ति ही अपने अन्दर समाहित करता है। धर्म के महत्व को जितना भी प्रतिपादित करने का प्रयास किया जाए वह कम ही है इसीलिए कहा गया कि-

इस संसार में एक धर्म ही सुहृद् है जो मृत्यु के पश्चात् भी साथ चलता है और सब पदार्थ वा संगी शरीर के नाश के साथ ही नाश को प्राप्त होते हैं अर्थात् सब का संग छूट जाता है परन्तु धर्म का संग कभी नहीं छूटता।

– अशोक आर्य
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

साधुवाद

• 19 January 2023, New Delhi website: newsum.media

"We are not going to withdraw the notice regarding non-veg food. It is an Arya Samaj college. We have our philosophy and that is why we won't serve non-veg food. We conduct 'havan' regularly. We follow our rules. It is written in the hostel prospectus that non-veg food will not be served in the hostel," Hansraj College principal Rama Sharma said on Wednesday. "We don't ask St Stephen's (college) to conduct 'havan'. We don't interfere with Khalsa College rules. Then why are we being questioned?" She added.

Some SFI students are protesting against the college's decision to not serve non-veg food.

सत्यार्थ प्रकाश पहेली - ०८/२२ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ०८/२२ के चयनित विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- श्री पुरुषोत्तम मेघवाल; उदयपुर (राज.), श्रीमती सुनीता सोनी; बीकानेर (राज.), श्रीमती रूपादेवी सोनी; बीकानेर (राज.), प्रधान आर्य समाज; बीकानेर (राज.), श्रीमती उषादेवी सोनी; बीकानेर (राज.), श्री महेश चन्द्र सोनी; बीकानेर (राज.), श्री हर्षवर्द्धन आर्य; नवादा (बिहार), श्रीमती सुप्रिया चावला; जालन्धर (पंजाब), श्री इन्द्रजित् देव; यमुनानगर (हरि.), श्रीमती कंचनदेवी सोनी; बीकानेर (राज.), डॉ. राजबाला कादियान; करनाल (हरि.), श्री हीरालाल बलई; उदयुपर (राज.), श्री गोपाल राव; निम्बाहेड़ा (राज.), श्री आर.सी. आर्य; कोटा (राज.), श्री जीवन लाल आर्य; दिल्ली, श्रीमती कमलकान्ता सहगल; पंचकूला (हरियाणा)।

सत्यार्थ सौरभ के उपर्युक्त सभी सुधी पाठकों को हार्दिक बधाई।

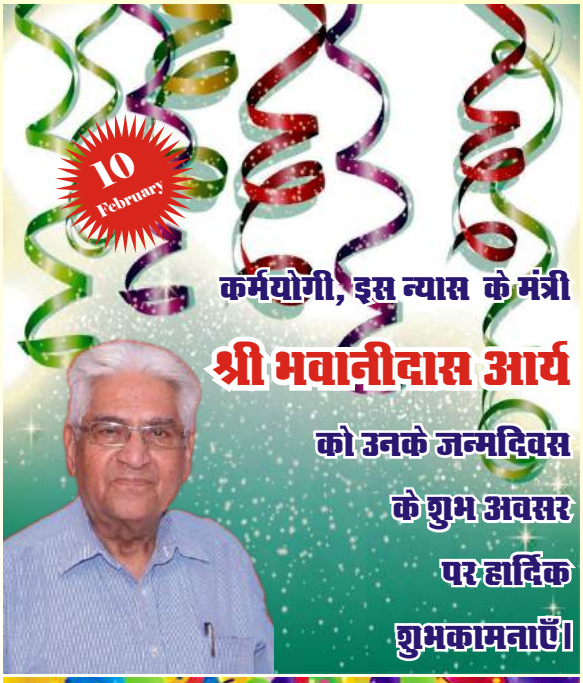

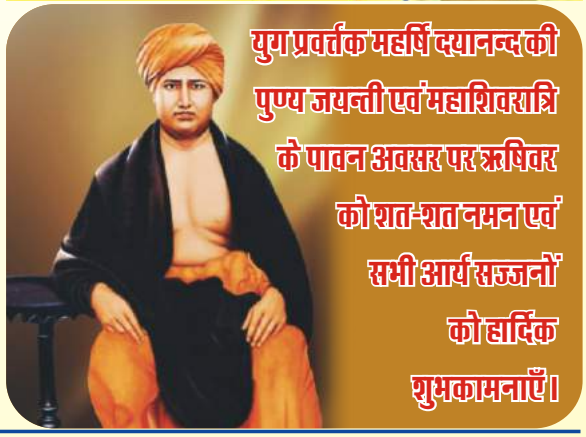

नवलखा की रामायण

शीर्षक पढ़ कर आप चौंकें नहीं? इससे इतना ही अभिप्राय है कि नवलखा की आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा में २० चित्रों की सहायता से भगवान श्रीराम के पावन जीवन चरित्र का चित्रण किया गया है।

भगवान श्री राम का पूरा जीवन एक ऐसे महामना का जीवन है जो भारत के कण-कण में व्याप्त उन आदर्शों को हमारे समक्ष प्रस्तुत करता है जो आज आश्चर्यजनक लगते हैं। आएँ उस काल को थोड़ा समझने का प्रयास करें। वेद में मानवमात्र के कल्याण के लिए अनेक यज्ञों का भी उल्लेख मिलता है। यहाँ इस चित्र में महाराजा दशरथ पुत्रेष्टि यज्ञ करते हुए दिखाये गये हैं जिसके फलःस्वरूप उन्हें राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न जैसे पुत्रों की प्राप्ति हुई। पुत्रों के जीवन में श्रेष्ठतम संस्कारों को डालने के लिए और वैदिक शिक्षाओं को प्रविष्ट कराने के लिए उनकी शिक्षा दीक्षा का सारा जिम्मा महान् ऋषियों के पास था। एक चित्र में महर्षि वशिष्ठ चारों भाइयों को शिक्षा दे रहे हैं। महर्षि वशिष्ठ के पास शिक्षा लेने के उपरान्त, क्षत्रिय होने के नाते यह आवश्यक था कि वे अस्त्र-शस्त्र और दिव्यास्त्रों की शिक्षा लें। एक चित्र में आप देख रहे हैं कि उस समय के महान् वैज्ञानिक महर्षि विश्वामित्र महाराजा दशरथ के दरबार में इसलिए आये हैं कि वे चारों भाइयों को उच्च शिक्षा के लिए और साथ में दुष्टों के दलन के लिए अपने साथ ले जा सकें। पुत्र प्रेम के मोह में उलझे दशरथ जब आनाकानी करते हैं तो बच्चों के भविष्य का वास्ता देकर महर्षि वशिष्ठ उनको राजी कर लेते हैं। आगे के कई वर्ष श्रीराम और लक्ष्मण विश्वामित्र जी के आश्रम में शिक्षा प्राप्त करते हुए बिताते हैं और यहीं पर ताड़कादि कई दुष्टों का वध भी करते हैं।

शिक्षा पूर्ण होने के पश्चात् ऋषि विश्वामित्र राम और लक्ष्मण के साथ जनकपुरी की ओर चल पड़े, जहाँ राजा जनक की पुत्री सीता जी के स्वयंवर की तैयारियाँ हो रही थीं। रास्ते में एक उजाड़ आश्रम में एक दीप्तिमान तपस्वी महिला इनको दिखी। श्रीराम के पूछने पर ऋषि विश्वामित्र ने अहिल्या का सारा इतिहास इनको बताया कि किस प्रकार देवताओं के राजा इन्द्र ने धोखा देकर और गौतम ऋषि का रूप

धारण करके अहिल्या का सतीत्व भंग किया। गौतम ऋषि ने अहिल्या को भी दोषी मानते हुए उनको त्यागकर एकान्त में तपस्या करने का आदेश दिया फलस्वरूप अनेक वर्षों से **तपस्या में लीन अहिल्या**

एक पत्थर के समान ही बन गई थी। यहाँ तक कि उनके पुत्र ने भी उनका साथ नहीं दिया। **यह सब सुनकर समाज से तिरस्कृत इस तपोनिष्ठ महिला के चरणों में श्रीराम ने प्रणाम किया और उनकी अभ्यर्थना की।** इस सबके कारण अहिल्या को अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा वापस मिली। इसीलिए प्रायः कह दिया जाता है कि श्रीराम के स्पर्श से पत्थर की अहिल्या नारी बन गई। वाल्मीकि रामायण में उक्त प्रसंग वैसा ही है जैसा हमने बताया।

जनकपुरी पहुँचकर श्रीराम ने सीता जी के स्वयंवर में भाग लिया और पृथिवी तल पर उस समय की सर्वश्रेष्ठ जोड़ी श्रीराम और सीता-विवाह के बन्धन में बंध गए।

समय अपनी गति से चलता रहा। वह समय भी आया जब महाराज दशरथ ने स्वयं वानप्रस्थ लेकर श्रीराम के राज्याभिषेक का निर्णय लिया। परन्तु विमाता कैकेयी को मंथरा की मंत्रणा पर विश्वास करने के कारण यह निर्णय अनुचित लगा और वह नाराज होकर कोप भवन में चली गईं। पूर्व किसी अवसर पर दिए दो वरों को माँगने का सर्वाधिक उपयुक्त समय कैकयी को यही लगा। उन्होंने महाराजा दशरथ के सामने दो प्रस्ताव रखे कि वे श्रीराम को तापस वेश में १४ वर्ष के लिए वन भेज दें और दूसरे भरत का अयोध्या के सिंहासन पर राज्याभिषेक करें। इस अप्रत्याशित प्रस्ताव को सुनकर दशरथ हक्के-बक्के रह गए। उनकी हालत ऐसी हो गई कि वे श्रीराम को अपने मुँह से अपनी दुरावस्था का कारण बता भी नहीं सके। पर श्रीराम को जैसे ही माता कैकेयी के माध्यम से दोनों शर्तों का पता चला तो वे बिना किसी दुःख के तुरन्त उनकी आज्ञा के पालन हेतु समुद्यत हो गए। राजा दशरथ मूर्छित प्रायः कोप भवन में पड़े रहे और उधर श्रीराम माता कौशल्या से वन प्रस्थान की आज्ञा लेने उनके महल में गए। त्रेतायुग में सभी स्त्री-पुरुष प्रतिदिन यज्ञ किया करते थे। वाल्मीकि लिखते हैं कि माता कौशल्या उस समय अग्निहोत्र कर रही थीं।

जब उन्हें यह सब पता चला तो वे दुःख के सागर में डूब गईं। स्वाभाविक भी था कहाँ तो पुत्र के राज्याभिषेक का प्रसंग था और कहाँ १४ वर्ष के लिए वनगमन का आदेश। पर अन्ततोगत्वा उन्होंने श्री राम को स्वीकृति दे दी। त्याग की पराकाष्ठा यहाँ तब देखने को मिलती है जबकि सीता और भाई लक्ष्मण को वन गमन का कोई आदेश नहीं था परन्तु श्रीराम के साथ जाने को वे दोनों भी उद्यत हो गए और जिद करके श्रीराम की और कौशल्या जी की अनुमति भी ले ली।

अयोध्या के इतिहास में यह काला दिवस था। प्रजा अपने सबसे समर्थ, सबसे प्यारे युवराज श्रीराम के राज्याभिषेक की तैयारी कर रही थी उस समय जब उन्होंने तपस्वी वेश में राम-सीता एवं लक्ष्मण को बिना संसाधनों को लिए वन जाते देखा तो उनके दुःख का पारावार नहीं रहा और वे बहुत दूर तक रोते-पीटते श्रीराम के साथ-साथ चलने लगे जब श्रीराम नदी किनारे सरयू तट पर पहुँचे तो वहाँ जो केवट था उसे सब जानकारी मिली। जो लोग श्रीराम के समय में जाति-पांति ऊँच-नीच थी ऐसा मानते हैं उन्हें इस दृश्य का ध्यान रखना चाहिए जहाँ श्रीराम निषाद को अपने गले लगा लेते हैं। **मित्रों!**

वस्तुस्थिति यह थी कि आर्यावर्त्त में जन्मगत ऊँच–नीच व अस्पृश्यता के लिए कोई स्थान नहीं था। उधर त्याग की एक और मिसाल भरत के द्वारा स्थापित की जाती है। वनगमन का यह प्रकरण अयोध्या में चल रहा था उस समय भरत और शत्रुघ्न अपने ननिहाल गए हुए थे वे जब लौटे तो उन्हें सारे काण्ड का ज्ञान हुआ। अपनी माता और मंथरा को उन्होंने क्या-क्या नहीं कहा? परन्तु जो होना था सो तो हो गया। उधर महाराज दशरथ की मृत्यु हो गई। भरत तीनों माताओं, सैनिकों और मंत्रियों एवं प्रजा सहित श्री राम को वापस अयोध्या लाने का निश्चय करके गये परन्तु श्री राम किसी भी कीमत पर राजी नहीं हुए तो उस समय श्री भरत ने भी प्रतिज्ञा की कि **अब अयोध्या पर १४ वर्ष तक आपकी चरण पादुकाएँ ही शासन करेंगी। मैं केवल आपके प्रतिनिधि के रूप में ही नन्दीग्राम में तापस वेश में रहते हुए ही राजकाज सँभालूँगा** और १४ वर्ष के पश्चात् आपके लौटने में अगर एक दिन का भी विलम्ब हुआ तो मैं अपने प्राण त्याग दूँगा। **विश्व के इतिहास में यह अपने आप में अद्‌भुत प्रकरण है कि एक चक्रवर्ती सम्राट के सिंहासन पर १४ वर्ष तक चरण पादुकाओं ने राज किया।**

वनवास में जब श्रीराम भाई और पत्नी सहित पंचवटी में निवास कर रहे थे तो रावण की बहिन शूर्पणखां श्रीराम को देखकर उनके ऊपर मोहित हो गई और जैसाकि राक्षस कुल में बहु विवाह निषेध नहीं था उन्होंने भगवान राम के समक्ष विवाह का प्रस्ताव रखा। राम और लक्ष्मण ने उन्हें समझाया कि हम रघुवंशी हैं नियमतः हमारे यहाँ एक विवाह ही किया जाता है और जब शूर्पणखां नहीं मान रही थी तो लक्ष्मण ने उसको अपमानित और विरूपित कर वहाँ से भगा दिया। इसी शूर्पणखां ने रावण को सीता के अपहरण के लिए उकसाया और रावण सीता को अपहृत करके ले गया तो दोनों भाई अत्यन्त वेदना को लिए माँ सीता की खोज में निकल पड़े। मार्ग में शबरी का आश्रम था जो कि एक भीलणी श्रीराम के गुणों पर मुग्ध थी। जब राम उधर आये तो अत्यन्त श्रद्धाभाव से उसने मीठे-मीठे बेरों से उनका आतिथ्य किया और दोनों भाइयों ने कृतज्ञता के साथ उसे स्वीकार किया। **यहाँ भी यह दृष्टिगोचर होता है कि राम की दृष्टि में सभी मानव एक जैसे थे। उनमें कोई ऊँच–नीच नहीं थी। उन्होंने प्रेम से शबरी के**

बेर तथा उनका आतिथ्य स्वीकार किया।

श्रीराम सीता को खोजते हुए जब ऋष्यमूक् पर्वत पर पहुँचे तो बहुत दूर से सुग्रीव ने उनको देखा और उसके मन में यह संशय हुआ कि कहीं ये बाली के भेजे हुए लोग तो नहीं हैं जो उनका अनिष्ट करने आ रहे हैं। अतः उन्होंने सारी जानकारी लेने के लिए श्री हनुमान को उस ओर भेजा। हनुमान और श्रीराम के बीच परिचय हुआ तथा वार्तालाप हुआ। इस आदान प्रदान के बाद श्रीराम लक्ष्मण से कहते हैं कि- **यह व्यक्ति चारों वेदों में पारंगत विद्वान् है। एक भी स्खलन इसकी वार्ता में नहीं हुआ है।** श्री हनुमान के वेद-वेदांग के पण्डित होने का इससे बड़ा क्या प्रमाण हो सकता है? समय आया तो हनुमान और वानरों की टोली सीताजी के संधान के लिए चलते-चलते जब लंका के सामने स्थित समुद्र के दूसरी ओर पहुँची और उन्हें यह निश्चय हो गया कि सीता जी लंका में ही हैं तो हनुमान लंका में पहुँचकर सीता का संधान करने लगे। बहुत प्रयत्न के पश्चात् भी जब सीता नहीं मिलीं तो उन्हें स्मरण हुआ कि अगर सीता जीवित हैं तो नदी किनारे किसी उपवन जैसे स्थान पर वे अवश्य ही संध्या करने आयेंगी। इसी आधार

पर उन्होंने अशोक वाटिका का संधान किया और वहाँ माँ सीता से वार्तालाप कर उन्हें श्रीराम की अंगूठी देकर और उनकी निशानी लेकर लौटने से पूर्व रावण को अपना पराक्रम दिखा और लंका दहन कर वापस श्रीराम के पास पहुँच गए। अब क्योंकि रावण किसी प्रकार भी सीता को लौटाने के लिए तैयार नहीं था इसलिए युद्ध अवश्यंभावी था। अन्यायी लोगों को दण्ड देना क्षत्रियों का कर्त्तव्य भी है। आर्यावर्त्त के दक्षिण सिरे से लेकर लंका तक बड़ी कुशलतापूर्वक एक पुल बनाया गया जिसके अवशेष आज नासा ने भी अपने उपग्रहों से खोजे हैं और जिसे उन्होंने एडम पुल का नाम दिया है। उस पुल का निर्माण श्रीराम के द्वारा उस समय करवाया गया और पुल से लंका पहुँचकर भीषण युद्ध हुआ। और अन्ततोगत्वा रावण को उसके किए हुए की सजा मिली। यद्यपि रावण के पास संसाधनों की रथों, अस्त्र-शस्त्रों की प्रचुरता थी, परन्तु उसका पक्ष अन्याय का था अधर्म का था। दूसरी ओर श्रीराम के पास वे संसाधन नहीं थे परन्तु उनके पास सत्य था और धर्म था। **और जहाँ धर्म होता है विजयश्री उसी का वरण करती है। रावण का वध हुआ। सीता श्रीराम को मिली।**

विभीषण को लंका का राज्य देकर श्रीराम पुष्पक विमान से अयोध्या वापस लौटे। जहाँ चरण पादुका लेकर भरत उनका इन्तजार कर रहे थे। पूरे अयोध्या में उत्सव का माहौल बन गया। श्रीराम का राज्याभिषेक हुआ और एक न्यायप्रिय राजा ने लम्बे समय तक अयोध्या पर धर्मपूर्वक शासन किया। सन्तान में यदि सुसंस्कार डालने हैं तो गर्भावस्था में माता के आसपास सारा परिवेश अत्यन्त सात्विक होना चाहिए क्योंकि होने वाली सन्तान पर उसका प्रभाव पड़ता है। इस विज्ञान को उस समय भली प्रकार से समझा जाता था अतः गर्भवती सीता जी को वाल्मीकि के आश्रम में भेज दिया गया। जहाँ पर लव और कुश पैदा हुए। उनका लालन-पालन भी वहाँ हुआ और श्रीराम के पश्चात् अयोध्या की बागडोर भी उनको प्राप्त हुई।

कक्ष में केवल मात्र कुछ चित्रों को प्रदर्शित कर हमने अत्यन्त संक्षेप में श्रीराम की महान् कथा को दर्शकों के सामने प्रस्तुत किया है। जिसे देखकर दर्शक मन्त्रमुग्ध हो जाते हैं। राम के जीवन को लेकर के अनेक प्रकार के प्रश्नचिह्न लगाए गये हैं परन्तु राम की मर्यादा को लेकर पूरी रामायण में कहीं भी एक सलवट हमें प्राप्त नहीं होती यह सुनिश्चित है। यही नवलखा की रामायण का आधार है।

– अशोक आर्य

सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

श्री रतिराम शर्मा, श्री रामेश्वर दयालु गुप्त; गाजियाबाद, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री सुरेश चन्द्र आर्य, श्री दीनदयाल गुप्त, स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री भवानी दास आर्य, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री नारायण लाल मित्तल, श्रीमती आभा आर्या, श्रीमती शारदा गुप्ता, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, श्री सुधाकर पीयूष, आर्यसमाज गाँधीधाम, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, प्रो. आई. जे. भाटिया; नासिक, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती ओमप्रकाश वर्मा; जयपुर, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री दीपचन्द आर्य; बिजनौर, श्री खुशहालचन्द आर्य, गुप्तदान उदयपुर, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्री मोती लाल आर्य, श्री रघुनाथ मित्तल, श्री जयदेव आर्य, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, श्री नरेश कुमार राणा, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री वीरेन्द्र मित्तल, श्री विजय तायलिया, गुप्त दान दिल्ली, प्रो. आर.के.एरन, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टॉक, श्री विकास गुप्ता, श्री भारतभूषण गुप्ता, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री एम.पी. सिंह, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री विवेक बंसल, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, श्री लोकेश चन्द्र टांक, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरसेन मुखी, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, श्री राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा, डॉ. सत्या पी. वार्ष्णेय; कनाडा, श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय; बडोदरा, श्री नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बगहा (बिहार), श्री गणेशदत्त गोयल, बुलन्दशहर (उ. प्र.), श्री पूर्णचन्द आर्य, कानोड़, श्री वेदप्रकाश आर्य; नई दिल्ली, श्री सत्यनारायण शर्मा; उदयपुर, श्रीमती राधा देवी-रतन लाल राजोरा; निम्बाहेड़ा, श्री सत्यप्रकाश शर्मा; उदयपुर, सुदर्शन कपूर; पंचकूला, श्री देवराज सिंह; उदयपुर, श्रीमती ललिता मेहरा; उदयपुर, श्री कृष्ण लाल डंग आर्य; हिमाचल प्रदेश, श्री जी. राजेश्वर (गौड़) आर्य; हैदराबाद, पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर, श्री बलराम जी चौहान; उदयपुर, श्री राकेश जैन; उदयपुर, श्रीमती कमलकान्ता सहगल; पंचकूला, श्री अम्बालाल सनाढ्य; उदयपुर, श्री भँवर लाल आर्य; उदयपुर, श्री वेलजी धनजी भाई; महाराष्ट्र, श्री सज्जनसिंह कोठारी; जयपुर, श्री चेतन प्रकाश आर्य; जोधपुर, ठाकुर जितेन्द्र पाल सिंह; अलीगढ़, श्री घनश्याम शर्मा; जयपुर, श्री मानसिंह चौहान; डूंगरपुर, श्री अजय कुमार गोयल; पानीपत

दिनांक १ अक्टूबर ई.सन् १८८१ (वि. सं. १९३८) को महर्षि बनेड़े पहुँचे। वहाँ के स्वामी राजा गोविन्द सिंह ने, जो संस्कृत का विद्वान् था, महर्षि का अच्छा सत्कार किया। उसके दोनों राजकुमारों-अक्षयसिंह और रामसिंह ने महर्षि को साम-गान सुनाया, जिससे उन्हें बड़ी प्रसन्नता हुई। वहाँ के पुस्तकालय से महर्षि ने वेद का निघण्टु ग्रन्थ लेकर अपने पास की प्रति से उसका मिलान किया। वहाँ से विदा होकर वे दिनांक २६ अक्टूबर सन् १८८१ ई. को चित्तौड़ पहुँचे। महाराणा की आज्ञा के अनुसार कविराजा श्यामल दास ने महर्षि के स्वागत का समुचित प्रबन्ध करवा दिया। महर्षि ने वेदोक्त आर्य धर्म का वहाँ प्रचार करना आरम्भ किया, उनके उपदेशों को सुन मेवाड़ वासी जग गये। विरोधियों ने विष उगलना आरम्भ किया। परन्तु उनकी एक न चली। महर्षि के उपदेशों को सुनने के लिए मेवाड़ के प्रतिष्ठित सरदारों में से देलवाड़े के राज फतहसिंह, कानोड़ के रावत उम्मेद सिंह, शाहपुर के राजाधिराज नाहरसिंह, आसींद के रावत अर्जुनसिंह, शिवगगढ़ के महाराज गयसिंह आदि प्रायः उनके पास आया करते थे। महाराणा भी यथावकाश महर्षि के पास उपदेश सुनने जाते थे। इससे महर्षि के प्रति उनकी श्रद्धा बढ़ती गई और उन्होंने उदयपुर आने के लिए महर्षि से विनयपूर्वक आग्रह किया। इस पर महर्षि ने सूचित किया कि बम्बई से लौटता हुआ मैं उदयपुर अवश्य आऊँगा। अपनी पूर्व प्रतिज्ञा के अनुसार बम्बई से लौटते समय महर्षि का वि. सं. १९३९ के द्वितीय श्रावण (ता. ११ अगस्त ई.सं. १८८२) को उदयपुर में आगमन हुआ। वहाँ सज्जन निवास बाग के नवलखा नामक महल में उनका ठहरना हुआ। महाराणा, द्वितीय श्रा. कृ. १४ को महर्षि से भेंट करने गये और तत्पश्चात् नियमपूर्वक महर्षि के पास जाया करते थे। महाराणा के सभी सरदार महर्षि के उपदेशों को बड़ी श्रद्धा से सुनते। उन (सरदारों) में आसींद के रावत अर्जुन सिंह, पारसोली के राव रत्नसिंह, शाहपुरे से राजाधिराज नाहरसिंह, शिवगढ़ के महाराज रायसिंह, मामा बख्तावरसिंह, कविराज श्यामलदास, राय मेहता पन्नालाल, मेहता तख्तसिंह, पुरोहित पद्यनाथ और ढ़ीकला जगन्नाथ आदि मुख्य थे।

महाराणा सज्जनसिंह का महर्षि से सम्बन्ध

महर्षि के सारगर्मित उपदेशों का महाराणा के जीवन पर बड़ा प्रभाव पड़ा। महाराणा का पहले से ही संस्कृत की ओर झुकाव तो था ही और इस

सत्समागम से दर्शन-शास्त्रों की ओर भी उनका अनुराग बढ़ा। उन्होंने संस्कृत-शैली से सब राजकीय कार्यालयों के नाम रक्खे जैसे महद्राज सभा, शैलकान्तार-सम्बन्धिनी सभा, निज-सैन्य सभा, शिल्प सभा आदि। महाराणा के हृदय पर महर्षि की विद्वता का सिक्का जम गया था, इसलिए वैशेषिक दर्शन, पातन्जल योगसूत्र और मनुस्मृति आदि ग्रन्थों को महर्षि से सुना करते थे। उन (महाराणा) की स्मरणशक्ति इतनी प्रबल थी कि वे एक घण्टे में मनुस्मृति के २२ श्लोकों का आशय याद कर लेते थे। उन्होंने महर्षि से कुछ योग सम्बन्धी क्रियाएँ भी सीखीं, परन्तु फिर बीमार रहने से वे उनमें विशेष उन्नति न कर सके।

महाराणा जवानसिंह के पश्चात् चार पीढ़ी तक बागोर की शाखा से गोद लिए जाकर महाराणा बनाए गये थे और उनमें से किसी के संतति न हुई। इस वर्ष महाराणा सज्जनसिंह की तीसरी महाराणी के, जो ईडर की थीं, गर्भस्थिति के चिह्न दृष्टिगोचर होने लगे, तब प्राचीन रीति के अनुसार गर्भ-रक्षार्थ नाना प्रकार के अनुष्ठान, उपयोग आदि होने लगे। महर्षि ने भी यह वृत्तान्त सुना। हवनादि कार्यों में भाग लेने की प्रार्थना पर महर्षि ने भी, जो यज्ञादि के बड़े पक्षपाती थे और दैनिक कृत्यों में हवन को गृहस्थ का मुख्य कर्म समझते थे, वैदिक रीति से यज्ञ करवाया। यज्ञ का फल शुभ हुआ और माघ शु. २ (ता. ६ फरवरी सन् १८८२ ई.) को महाराणा के कुंवर का जन्म हुआ। इस शुभ अवसर पर उक्त महाराणा ने दस लाख रुपये व्यय करना निश्चय किया था, परन्तु उस नवजात राजकुमार का उसी रात्रि को परलोक-वास हो गया, जिससे सारा हर्ष शोक में परिणत हो गया, तो भी महाराणा ने राजकुमार की पुण्य स्मृति में एक अच्छी रकम फीरोजपुर के अनाथालय को भेज दी।

महर्षि के सत्संग से महाराणा की दिनचर्या में बड़ा परिवर्तन हुआ और वे प्रत्येक कार्य नियत समय पर करने लगे। लोकोपयोगी कार्यों में प्रतिदिन महाराणा की रुचि बढ़ने लगी। महर्षि ने महाराणा को परामर्श दिया कि क्षत्रियों के लिए पृथक् पाठशाला बनाई जाकर उन्हें शास्त्रोक्त विधि से हर तरह की शिक्षा देने के साथ शस्त्रास्त्र-शिक्षा की भी योजना की जाय। महाराणा ने इस बात को स्वीकार किया, किन्तु उनके अस्वस्थ रहने से वह कार्य स्थगित रहा। मेवाड़ में राजकीय भाषा हिन्दी थी, परन्तु उनमें फारसी शब्दों का अधिक प्रयोग होता था। यह देख महर्षि ने महाराणा को राजकीय भाषा में शुद्ध नागरी को स्थान देने और साधारण लोगों को समझ में आ सके, ऐसी

भाषा के रखने का आग्रह किया। स्वामीजी का आदेश स्वीकार कर महाराणा ने नागरी लिपि और सरल भाषा में कार्य होने की आज्ञा जारी की। महर्षि ने महाराणा को स्वदेशी विधि द्वारा चिकित्सा कराने और देशी औषधालय जारी करने का भी परामर्श दिया था, परन्तु महाराणा का देहावसान हो जाने से वह कार्य पूरा न हो सका।

महर्षि ने उदयपुर में ही 'सत्यार्थ प्रकाश' के द्वितीय संस्करण को समाप्त कर वि.सं.१९३९ भाद्रपद के शुक्ल पक्ष में उसकी भूमिका लिखी और वही रहते समय परोपकारिणी सभा की स्थापना कर महाराणा को उसका सभापति नियत किया। महाराणा ने भी उस सभा की सहायता के लिए दस हजार रुपये दिये और उनके सरदारों आदि ने भी इस कार्य में सहयोग

दिया, जिससे एक अच्छी रकम एकत्र हो गई। यद्यपि स्वामी जी के शरीर में व्याधि का लेशमात्र भी नहीं था, तो भी उन्होंने शरीर को अनित्य जान अपने संग्रह किये हुए ग्रन्थ, धन और यन्त्रालय आदि को परोपकार में लगाने की आज्ञा देकर उदयपुर में ही उसका स्वीकार पत्र तैयार किया और उसके २३

ट्रस्टियों में महाराणा के अतिरिक्त मेवाड़ से ही सात सदस्य (वेदला के राव तख्तसिंह, देलवाड़े के राज फतहसिंह, आसींद के रावत अर्जुनसिंह, शाहपुरे के राजाधिराज नाहरसिंह, शिवरती के महाराजा गजसिंह, कविराजा श्यामलदास और पं. मोहनलाल विष्णुलाल पण्ड्या) रखे गये। इससे निश्चय होता है कि महाराणा और उसके सरदारों के सम्मिलित होने से आर्यसमाज की अधिकाधिक उन्नति होने का महर्षि को विश्वास था।

महाराणा ने महर्षि से षड्दर्शनों का भाष्य छपवाने का अनुरोध किया और उसके लिये बीस हजार रुपये अपनी ओर से व्यय करने का वचन दिया। फाल्गुन वदि ६ (ता. २७ फरवरी ई. सं. १८८२) को महाराणा से विदा होकर महर्षि शाहपुरा गये। उस अवसर पर महाराणा ने स्वयं उनके पास जाकर विदायगी के सम्मान-रूप दो सहस्र रुपये भेंट किये, परन्तु महर्षि ने उन्हें लेना मंजूर नहीं किया। फिर महाराणा ने वह द्रव्य परोपकारिणी सभा को दे दिया। महर्षि उदयपुर से शाहपुरा और वहाँ से जोधपुर गये, जहाँ उन्होंने प्राचीन वैदिक धर्म की महत्ता बतलाते

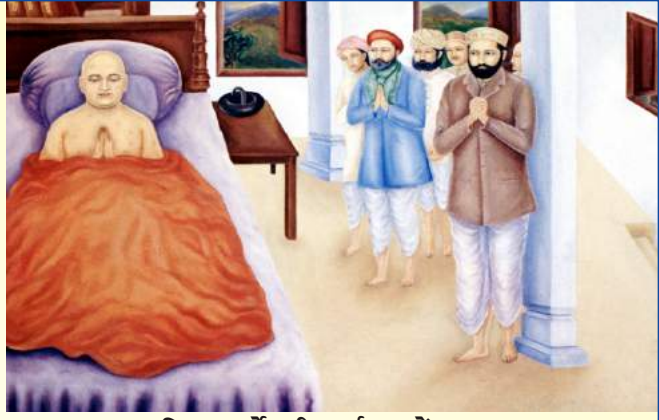

हुए अन्य प्रचलित धर्मों की कई बातों का खण्डन किया, जिससे वहाँ उनके बहुत से शत्रु हो गये। अन्त में कुछ दुष्टों ने चिढ़कर उनके आहार में विष मिला दिया; जिसके प्रभाव से कई दिन पीड़ित रहकर वि. सं. १९४० कार्तिक वदि ३० (ता. ३० अक्टूबर ई. सं. १८८३) को उनका निर्वाण हुआ।

महर्षि के बीमार होने की सूचना पाते ही महाराणा ने पं. मोहनलाल-विष्णुलाल पण्ड्या को यह आदेश देकर उनके पास भेजा कि यदि महर्षि के निर्वाण की सम्भावना हो, तो ऐसा प्रबन्ध कराना कि मैं भी उनके अन्तिम दर्शन कर सकूँ, परन्तु समय थोड़ा रह जाने से महाराणा की यह अभिलाषा पूरी न हो सकी।

महाराणा ने महर्षि के निर्वाण का संवाद सुना, तब वे शोक सागर में डूब गये और उन्होंने उसी समय निम्नलिखित छन्द रचकर महर्षि के प्रति अपूर्व श्रद्धा के साथ शोकोद्गार प्रकट किया-

सोरठा-

नभ चव ग्रह ससि दीपदिन, दयानन्द सह सत्व।
वय उनसठ वत्सर बिच, प्राप्त कियो पंचत्व।।

मनहरण कवित्त-

जाके जीह जोर तें प्रपंच फिलासिफन को,
अस्त सो समस्त आर्य्य मण्डल तें मान्यो मैं।
वेद के विरुद्धी मत–मत के कुबुद्धि मन्द,
भद्र–मद्र आदिन पै सिंह अनुमान्यो मैं।
ज्ञाता षट् शास्त्रन को वेद को प्रणेता जेता,
आर्यविद्या अर्कहू को अस्ताचल जान्यो मैं।
स्वामी दयानन्द जू के विष्णुपद प्राप्त हू तें,
पारिजात को सो आज पतन प्रमाण्यो मैं।

देश का दुर्भाग्य है कि महाराणा सज्जनसिंह भी अधिक न जिये और वि. सं. १९४१ पौष सुदि ६ (ता. २३ दिसम्बर ई. सं. १८८४) को इस असार संसार से विदा हो गये। यदि वह कुछ वर्ष और जीवित रहते, तो आर्यसमाज का इतिहास किसी अन्य रूप में लिखा जाता।

पुण्यभूमि मेवाड़ के प्रति महर्षि की अपूर्व श्रद्धा थी और चित्तौड़ को वे हिन्दू-जाति का पवित्र तीर्थ समझते थे। चित्तौड़ में रहते समय उन्होंने अपने शिष्यों से कहा था कि भारत में गुरुकुल के योग्य यदि कोई स्थल है, तो वह चित्तौड़ ही है। अतएव चित्तौड़ में गुरुकुल बनाने का प्रयत्न करना आवश्यक है।

प्रसन्नता का विषय है कि अब कुछ वर्ष पूर्व महर्षि की यह आकांक्षा सफल होकर चित्तौड़गढ़ में गुरुकुल स्थापित हुआ।

महर्षि के प्रयत्न से हिन्दू-समाज के विचारों में बहुत कुछ परिवर्तन हुआ, अनेक नगरों में आर्यसमाज स्थापित हुए और लोगों में नवीन विचार तथा जागृति उत्पन्न हुई। जो लोग हिन्दू-धर्म को छोड़कर अन्य धर्मावलम्बी बनते थे, उन्हें रोकने और अन्य धर्म ग्रहण कर चुके थे, उन्हें पुनः शुद्ध कर वैदिक धर्म में मिलाने के लिए शुद्धि का आयोजन किया गया। महर्षि ने अपने उपदेशों के समस्त ग्रन्थ हिन्दी भाषा में प्रकाशित किये, जिससे हिन्दी की बहुत कुछ उन्नति हुई। पंजाब जैसे देश में, जहाँ हिन्दी भाषा का कुछ भी प्रचार न था, आर्यसमाज के अनवरत परिश्रम के फलस्वरूप हिन्दी का यथेष्ट प्रचार हुआ और हो रहा है। महर्षि के उपदेश से वैदिक धर्म की जागृति हुई, इतना ही नहीं, किन्तु हिन्दू-जाति में समाज सुधार का काम चल निकला। कई स्थानों पर

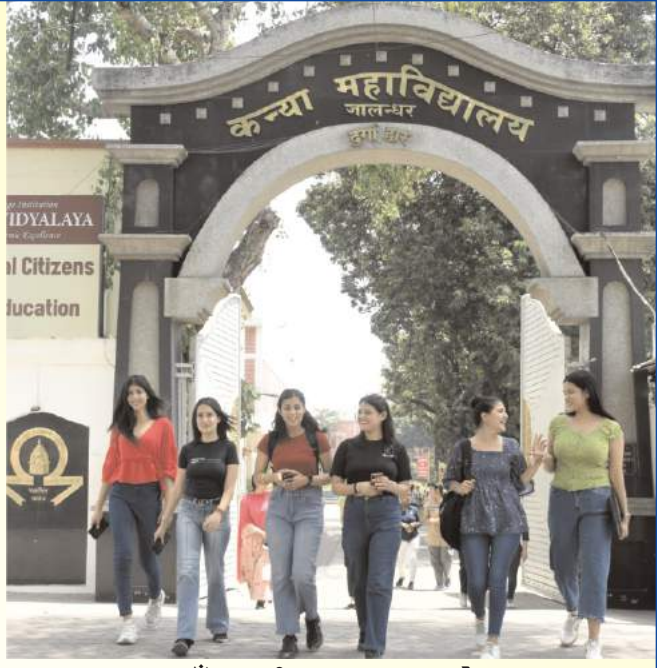

कन्या पाठशालाएँ खुलीं। जालन्धर के कन्या महाविद्यालय में सैकड़ों बालिकाएँ हिन्दी के साथ उच्चकोटि की शिक्षा पा रही हैं। उनके सदुपदेशों के कारण स्थान-स्थान पर गुरुकुल खुले, जहाँ अनेक विद्यार्थी संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी आदि में उच्च कोटि की शिक्षा प्राप्त कर अनेक लोकोपयोगी कार्यों में भाग ले रहे हैं। **सारे भारत में इस समय जो जागृति दीख पड़ती है, उसका मुख्य कारण महर्षि के उपदेश ही हैं।**

इन पंक्तियों के लेखक को बम्बई में रहते समय सन् १८८१ ई. के दिसम्बर से सन् १८८२ ई. के मई मास तक महर्षि के अनेक व्याख्यान सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और उसका बहुत कुछ प्रभाव उसके चित्त पर पड़ा। अतएव दयानन्द-निर्वाण-अर्द्धशताब्दी के सुअवसर पर उक्त आदरणीय महापुरुष, आदर्श विद्वान्, अपूर्व वेदज्ञ, निर्भीक-धर्मप्रवर्तक, सच्चे समाज-सुधारक, आर्य-संस्कृति के सर्वश्रेष्ठ पुरस्कर्त्ता, विश्वप्रेमी महर्षि दयानन्द सरस्वती के चिरस्मरणीय जीवन-कार्य की स्मृति में लेखक की यह लेख-रूप श्रद्धांजलि अर्पित है।

डॉ.गौरीशंकर हीरानन्द ओझा
-दयानन्द कोम्मेमोरेशन वोल्युम,
अजमेर से प्रकाशित, पृ. ३६१-३७२

अग्निहोत्र (हवन)

यज्ञ किसी भी कल्याणकारी कार्य को कहते हैं। अग्निहोत्र को भी यज्ञ कहते हैं। इतना ही नहीं अग्निहोत्र को सर्वश्रेष्ठ कार्य भी कहा है। सर्वश्रेष्ठ कार्य कहने का आधार यह है कि अग्निहोत्र से सभी प्राणधारियों (वनस्पति एवं शरीर धारियों) के जीवन आधार अर्थात् वायु-जल-भोजन की शुद्धि होती है। अशुद्ध अर्थात् प्रदूषित वायु-जल-भोजन हो तो जीवन नहीं चला सकते। हवन के भौतिक यज्ञ के साथ सामाजिक एवं आध्यात्मिक पक्ष भी है, यहाँ केवल भौतिक पक्ष का कुछ विवरण दिया गया है।

१. **यज्ञ कुण्ड**– यज्ञ कुण्ड का आकार उल्टे पिरामिड की तरह होता है, नीचे से संकरा (कम चौड़ा) और ऊपर से अधिक चौड़ा। नीचे से ऊपर जाते समय चारों तरफ का माप एक जैसा (चौकोर) रखा जाता है। इस आकार की वैज्ञानिकता यह है कि हवन की दहन क्रिया से पर्याप्त वायु का सम्पर्क मिल सके ताकि दहन क्रिया ठीक प्रकार से हो सके।

२. **समिधा**– हवन में प्रयोग होने वाले ईंधन (लकड़ी व गाय के गोबर के उपले) को समिधा कहते हैं। समिधा के लिए कोई भी लकड़ी या किसी भी पशु के गोबर का प्रयोग नहीं किया जाता। गाय के गोबर या कुछ विशेष लकड़ियों जैसे- बड़, पीपल, आम, पलाश, चन्दन, जांटी आदि ऐसी लकड़ियों का चयन किया जाता है, जिसमें कार्बन की मात्रा कम से कम और ऑक्सीजन की मात्रा अधिक से अधिक हो। उपर्युक्त लकड़ियों में कार्बन प्रतिशत २८-३२% तक और ऑक्सीजन ४०-४६% तक होता है। कीकर, शीशम, साल आदि में कार्बन ५८-६२% और कोयले में कार्बन ८०-८२% तक होता है और ऑक्सीजन १८-२०% और १-२% तक होती है। कम कार्बन अधिक ऑक्सीजन व ऊपर जाते हुए चौड़े होते हवन कुण्ड का आकार, ये सभी बातें अच्छे और पूर्ण दहन के लिए आवश्यक हैं। **अच्छा और पूर्ण दहन हवन सामग्री व घी को पूरी तरह गैसिज में परिवर्तित करने के लिए तो आवश्यक है ही, इसके साथ कम कार्बन, अधिक ऑक्सीजन व प्रचुरमात्रा में उपलब्ध वायु में दहन होने से कार्बन लगभग पूरी तरह से कार्बनडाइ ऑक्साइड (CO_2) में बदल जाती है।** यदि कार्बन की मात्रा अधिक है और

ऑक्सीजन व वायु की उपलब्धता कम है तो कार्बन मोनो ऑक्साइड (CO) गैस बनने की सम्भावना बनी रहती है। कार्बनडाइ ऑक्साइड (CO_2) गैस जहरीली व हानिकारक गैस नहीं है जबकि कार्बनमोनो ऑक्साइड (CO) गैस जहरीली व हानिकारक गैस है। हवन को सूर्य उदय के बाद और सूर्यास्त से पहले अर्थात् सूर्य के प्रकाश व खुले स्थान में करने का अभिप्राय यह है कि दहन पूर्ण हो और कुछ CO_2 गैस सूर्य के प्रकाश और जल वाष्प के साथ मिलकर फार्मलडिहाइड गैस में बदल जाती है, जो कृमि नाशक गैस है। बची हुई CO_2 गैस से पेड़-पौधे प्रकाश की उपस्थिति में भोजन बना लेते हैं।

३. **सामग्री**– हवन सामग्री में सुगन्धित (कपूर, केसर, चन्दन, अगर, तगर, पुष्प), पौष्टिक (नारियल, तिल, जौ, बादाम, अखरोट), पौष्टिक व मीठे पदार्थ (किशमिश, छुआरे, मुनक्का, खाण्ड आदि) और औषधीय पदार्थ (गूग्गल, गिलोय, नीम, तुलसी, जायफल, इलायची, लौंग आदि) मिले होते हैं। इन सब प्रकार के घटकों के दहन होने से जो गैसेज बनती हैं ये गैसें वायुमण्डल को सुगन्धित करने के साथ-साथ वायु में उपस्थित किसी भी प्रकार के हानिकारक जीवाणु (Germs), कीटाणु (Bacteria) व विषाणु (Virus) को नष्ट करके वायु को शुद्ध करती हैं।

४. **घी**– समिधा व सामग्री के साथ घी हवन का महत्वपूर्ण घटक है। घी दो कार्य करता है। प्रथम समिधा व सामग्री के दहन को अच्छी प्रकार सम्पन्न करता है और दूसरा घी के जलने से जितनी भी गैसें बनती हैं वे वायुमण्डल को सुगन्धित व शुद्ध करती हैं। हवन में देशी गाय के घी का प्रयोग किया जाता है। **अन्य किसी वसायुक्त पदार्थ या किसी तेल या अन्य किसी पशु के घी का प्रयोग नहीं करते क्योंकि यह गाय के घी में ही गुण है कि इसके जलने पर पैदा होने वाली कोई भी गैस हानिकारक नहीं होती। यह गुण किसी अन्य चिकनाई में नहीं होता।**

५. **हवन से बनने वाली गैसें**– हवनकुण्ड के आधार (नीचे से ऊपर की ओर) से ऊपर जलती अग्नि की लपटों का तापक्रम ३०० डिग्री सेल्सियस से १२०० डिग्री सेल्सियस तक रहता है। भिन्न भागों के भिन्न तापक्रम पर भिन्न घटकों से बहुत प्रकार की गैसेज बनती हैं। मुख्यरूप से हवन की गैसेज में ऐल्डिहाइड, कीटोन, अम्ल, एल्कोहल, फीनोल कार्बनडाइ ऑक्साइड व जल वाष्प होते हैं। ये सभी गैसेज रोगाणु नाशक हैं। वायुमण्डल में उपस्थित अन्य हानिकारक गैसों के प्रभाव को हवन की गैसें बहुत कम कर देती हैं।

६. **विकिरण रोधक**– हवन से बनने वाली गैसें जब तक आस-पास के वायुमण्डल में रहेंगी सभी प्रकार के हानिकारक विकिरणों (Radiation) को अवशोषित करती रहेंगी।

७. **हवन और पर्यावरण** आज धरती पर जीवन बीमारियों और प्रदूषण से अक्रान्त है। हवन इस समस्या का समाधान है। इसका वैज्ञानिक आधार यह है कि हवन के लिए गोघृत चाहिए। गाय वहाँ होंगी जहाँ कृषि है। गाय बैल देगी और गाय व बैल गोबर देंगे, गोबर धरती का स्वास्थ्य सुधारेगा, बैल जुताई-ढुलाई करके डीजल-पेट्रोल से होने वाले प्रदूषण से बचायेगा, कृषि में पेड़-पौधे वायुमण्डल की हानिकारक गैसेज को हटायेंगे। तो हवन गाय और कृषि ही बीमारियों और प्रदूषण को हटाकर स्वस्थ-सुखी जीवन दे सकते हैं, अन्य कोई मार्ग नहीं है। तो हमारी ऋषि जीवन शैली जिममें हवन-गाय-कृषि एक दूसरे से जुड़े हुए हैं, एकमात्र जीवन बचाने का उपाय हैं।

तो हवन जो गाय और कृषि से जुड़ा है, स्वयं में और गाय-कृषि के माध्यम से भी **पर्यावरण शोधक है।** किसी प्रकार का प्रदूषण करने वाला नहीं है।

८. प्रदूषण और बजट– जीवाश्म ईंधन (डीजल, पेट्रोल, कोयला) से वायु प्रदूषण से भारत को सालाना नुकसान १०.७ लाख करोड़ और १० लाख लोग वायु प्रदूषण से होने वाली बीमारियों का शिकार होते हैं। यह नुकसान जी.डी.पी. के ५.४% प्रतिशत के बराबर है जबकि देश का स्वास्थ्य बजट जी.डी.पी. का १.२८% है।

वायु प्रदूषण का नुकसान साल दर साल भारत के स्तर पर और (ग्रीनपीस संस्थान १३-२-२०२० रिपोर्ट) विश्वस्तर पर बराबर बढ़ रहा है। प्रदूषण के साथ नाना प्रकार की बीमारियाँ फैलने के कारण स्वास्थ्य बजट भी बढ़ता जाता है।

९. हवन और बीमारी– केन्द्र सरकार के स्वास्थ्य बजट से प्रत्येक घर में प्रतिदिन हवन किया जा सकता है। यदि देश के प्रत्येक घर में प्रतिदिन हवन होने लगे तो वायु प्रदूषण से होने वाली बीमारी नहीं होंगी, यह निश्चित है। ऐसा करने से प्रतिवर्ष देश का ३ लाख करोड़ रु. बचेगा।

१०. भारतीय संस्कृति और सरकार– भारतीय संस्कृति का आधार वेद हैं। अग्निहोत्र और आयुर्वेद, वेद के अभिन्न अंग हैं और सभी बीमारियों के कारगर और सस्ते इलाज हैं।

११. अग्निहोत्र और ऋषि दयानन्द– जैसे पहले कहा जा चुका है कि अग्निहोत्र के भौतिक पक्ष के साथ सामाजिक व आध्यात्मिक पक्ष भी है। ऋषि दयानन्द ने हवन के सामाजिक-आध्यात्मिक पक्ष के साथ भौतिक पक्ष को भी एक बहुत बड़े वैज्ञानिक की तरह रखा है। ऋषि कहते हैं प्रत्येक घर में प्रतिदिन हवन होना चाहिए नहीं तो वायु प्रदूषित हो जायेगी और अनेक प्रकार के रोग फैल जायेंगे। ऋषि यह बात लगभग १५० वर्ष पहले कह रहे हैं जबकि उनके सामने पर्यावरण प्रदूषण की समस्या नहीं थी क्योंकि १५० वर्ष पहले जनसंख्या बहुत कम थी, पेड़-पौधे बहुलता में थे, प्रदूषण फैलाने वाले क्रियाकलाप (यातायात व उद्योगों में जलने वाले जीवाष्म ईंधन, बिजली उत्पादन, शहरीकरण आदि) नहीं थे, पर फिर भी ऋषि १५० वर्ष दूर की देखकर और मल-मूत्र त्याग से होने वाले प्रदूषण से भी बचने की दृष्टि से हवन करने का निर्देश दे रहे हैं। आज हवन छोड़ने और अन्य प्रदूषण फैलाने वाले क्रिया

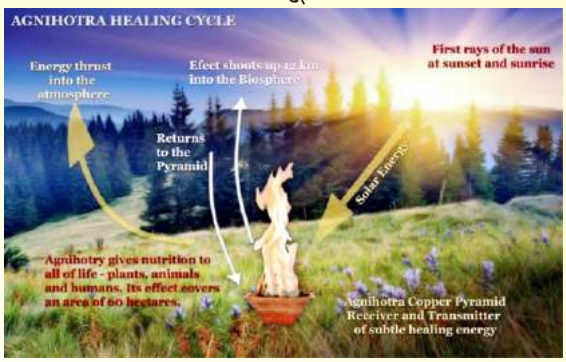

कलापों के बढ़ने के परिणाम स्वरूप होने वाले प्रदूषण के कारण अनेक प्रकार के रोगों के शिकार हम हो चुके हैं। ऋषि जिस दूरदृष्टि से निर्देश दे रहे हैं क्या वह दूरदृष्टि रासायनिक खाद, कीटनाशक, पॉलिथीन, परमाणु ऊर्जा, जीएम सीड्स (Genetically-modified Seeds), क्लोनिंग आदि की खोज करने वाले महान् वैज्ञानिकों में है? भले ही ये खोज और इनको खोजने वाले वैज्ञानिक कितने भी बड़े हों दूरदृष्टि व पर्यावरण सन्तुलन की दृष्टि से ऋषि के सामने बहुत छोटे हैं। जीवन के सभी क्षेत्रों से सम्बन्धित ऋषि दयानन्द के निर्देश जो वेद आधारित हैं एकमात्र सुखी जीवन का राजमार्ग है, इनकी उपेक्षा समस्याओं को निमंत्रण है। जन साधारण व सरकार की मर्जी कौनसा भी मार्ग चुने, पर परिणाम भुगतने में मर्जी नहीं चलेगी। क्योंकि कर्म-भोग का सिद्धान्त अटल है और सिद्धान्त के सामने किसी की कोई औकात नहीं होती, चाहे कोई भी हो। तो हवन-गाय-कृषि आयुर्वेद को अपनाएँ या टीकाकरण, लॉकडाउन, बेरोजगारी, गुलामी अपनाये यह निर्णय आपका है। **क्रमशः .....**

प्रस्तुति- डॉ. भूपसिंह भिवानी

सन्दर्भ- यज्ञ विज्ञान, लेखक एवं संकलन- हर्षदेव कुमार

प्रकाशक- भारतीय वेद विज्ञान प्रतिष्ठान

१०५१, सेक्टर- १, रोहतक (हरि.)

गृहस्थ आश्रम मृत्युपर्यन्त नहीं है।

जिस प्रकार गृहस्थ आश्रम में सुख पूर्वक रहने के लिए उससे पहले ब्रह्मचर्य आश्रम में तैयारी करनी पड़ती है। यहाँ निर्माण करना, विद्या, बल, सामर्थ्य, शक्ति बढ़ाना लक्ष्य होता है ताकि गृहस्थ आश्रम में कष्ट न हो।

उसी प्रकार संन्यास से पहले उसकी तैयारी वानप्रस्थ में होती है चार आश्रमों में पहला और तीसरा केवल तैयारी के लिए है। अर्थात् जीवन के ५० वर्ष तैयारी में ही लग जाते हैं।

गृहस्थ जीवन से निवृत्त होकर जो मनुष्य शक्ति सम्पन्न रहते हुए राष्ट्रहित की दृष्टि से अपने कर्तव्य या धर्म को निभाता है, जिससे कि वह राष्ट्र की उन्नतिशील सन्तानों को अपने ज्ञान अनुभव और स्वाध्याय के आधार पर उत्तम शिक्षण देता है..

जीवन के चार भागों में यह तीसरा भाग है। जिसे वानप्रस्थ आश्रम कहा जाता है। वानप्रस्थ शब्द 'वनप्रस्थ' शब्द का रूपान्तर है 'वन' शब्द का अर्थ है- वह वस्तु जिसकी हमको सबसे अधिक चाह हो।

'वन याचने' धातु से वन शब्द बना है। ऐसी याचनीय अभिलषणीय वस्तु केवल **ब्रह्म (ईश्वर) ही है।**

केनोपनिषद् में बतलाया **'तद्वनमिति उपासितव्यम्'** उस ब्रह्म का नाम वन है उसी की उपासना करनी चाहिए।

उस वन शब्द वाच्य ब्रह्म प्राप्ति के साधन का अभ्यास करने के लिए जो मनुष्य गृहस्थ से निवृत्त होकर उद्यत हुआ हो वह वनप्रस्थ कहलाता है।

वनप्रस्थ को ही वानप्रस्थ कहते हैं। यहाँ वन शब्द का अर्थ जंगल नहीं है।

ऐसे मनुष्य स्वाध्याय और ब्रह्म प्राप्ति का साधन करने के लिए शब्द विघ्नों (शोरगुल) से रहित मक्षिका मशक आदि के विघ्नों से रहित स्थान में रहकर

साधना करते हैं।

अपनी साधना से उत्पन्न ज्ञान और अनुभव के द्वारा बच्चों को शिक्षण का कार्य करते हुए राष्ट्रधर्म का पालन करते हैं। अपनी ही उन्नति से वे संतुष्ट नहीं रहते।

आज देश की परिस्थिति बहुत ही भयावह है। नैतिकता और संस्कार देने वाले आचरणशील विद्वानों की संख्या नगण्य है। गुरुकुलों में जाने को कोई तैयार नहीं। सोशल मीडिया तो भ्रम जाल बन गया है।

ऐसी विकट स्थिति में भी प्रबुद्ध लोग रिटायरमेंट के बाद पार्क में कुत्ते घुमा रहे हैं। घर में बैठे मक्खियाँ मार रहे हैं, कुछ तो बेटे बहु के साथ कलह करते रहते हैं। और कुछ शक्ति सामर्थ्य होते हुए दूसरे कार्यों में जुट जाते हैं। **उनका गृहस्थ आश्रम मृत्युपर्यंत हो गया है। बच्चों को घर की चाबी देने के लिए वे तैयार नहीं है।**

इतनी आदर्श आश्रम व्यवस्था समाप्त होने का दुष्परिणाम यह हुआ है कि आज वृद्धजन स्वाध्याय, संध्या, धर्म, दर्शन, आध्यात्म व श्रेयमार्ग के लिए न तो स्वयं तैयार हैं और न ही अपने बच्चों को ऐसा उपदेश करने की स्थिति में हैं।

हालत इतने बिगड़ गये हैं कि यदि उनका कोई बच्चा किसी की प्रेरणा से ध्यान, सत्संग में आने लगे, तो उनको भय लगता है कहीं यह अधिक सुधर गया, वैराग्य आ गया, ईश्वर उपासना करने लगा, राष्ट्रभक्त बन गया तो बहुत बड़ा अनिष्ट हो जाएगा। इसलिए अपने बच्चों को सत्संग, संध्या में लाते हुए उनका हृदय कम्पित होता है।

– आचार्य लोकेन्द्रः

विश्व भर से आने वाले पर्यटकों के नवलखा महल, उदयपुर के बारे में विचार

आज दिनांक १५ जनवरी २०२३ को इस भव्य नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र को देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस भव्य महल का पुनर्निर्माण भारतीय संस्कृति एवं वैदिक सत्य सनातन धर्म के पुनरुद्धार हेतु किया गया है। यह सांस्कृतिक केन्द्र महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की कर्मस्थली है। इसमें स्वामी जी का जीवन विवरण अतिसुन्दर एवं प्रेरणापूर्ण तरीके से दर्शाया गया है। इस परिसर में हमारे देश के महान् विभूतियों का चित्रण एवं मेवाड़ दर्शन का अद्भुत वर्णन देखने को मिलता है।

सोलह संस्कारों का जो अभूतपूर्व प्रदर्शन यहाँ देखने को मिला वो अपने आप में अद्वितीय तथा प्रेरणाप्रद है। **प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में संस्कारों का क्या महत्व है अगर जानना हो तो इससे सरल एवं सारगर्भित वर्णन पूरे विश्व में कहीं भी आपको देखने को नहीं मिलेगा।**

चारों वेदों में क्या है इसका सचित्र विवरण सुन्दर तरीके से यहाँ दर्शाया गया है। मिनी थियेटर के रूप में यहाँ आपको जो फिल्म दिखाई जाती है वो निश्चित रूपेण प्रत्येक मनुष्य के लिए प्रेरणादायक एवं नये जोश को उत्पन्न करने वाला है। आने वाली पीढ़ी को इस सांस्कृतिक केन्द्र का अवलोकन अवश्य करना चाहिए जिससे उनको सत्य सनातन संस्कृति, धर्म, दर्शन एवं महापुरुषों के विषय में सत्य-सत्य जानकारी प्राप्त हो सके। **यह केन्द्र उदयपुर के गौरव में चार चाँद लगाता है।** मैं यहाँ के सम्पूर्ण अधिकारी एवं कार्यकर्त्ताओं को इस अद्वितीय स्थल के निर्माण के लिए साधुवाद देता हूँ। – दिलीप भाटी, संयोजक- पशुपालन प्रकोष्ठ; भाजपा मण्डल, श्यामा प्रसाद मुखर्जी एवं प्रचार प्रसार मन्त्री

जयन्ती पर विशेष

क्रान्तिकारी बुधु भगत

भारतीय इतिहास के प्रसिद्ध क्रान्तिकारी बुधु भगत या बुद्धू भगत एक ऐसे क्रान्तिकारी थें जिनको गुरिल्ला युद्ध में निपुणता हासिल थी। उन्होंने अपने दस्ते को गुरिल्ला युद्ध करने के लिए प्रशिक्षित किया था। उनकी कार्यवाहियों से परेशान अंग्रेजों ने उनको पकड़ने के लिए १००० रुपये के इनाम की घोषणा भी कर दी थी। आज इस लेख में हम आपको बुधु भगत की जीवनी के बारे में बताने जा रहे हैं।

बुधु भगत का जन्म १७ फरवरी १७९२ में राँची, झारखण्ड में हुआ। बुधु भगत के द्वारा अंग्रेजों और साहूकारों के विरुद्ध उनके अन्याय के लिए कई आन्दोलन किए गए थे। जिसमें से लरका आन्दोलन एक ऐतिहासिक आन्दोलन है। छोटा नागपुर के आदिवासी इलाकों में अंग्रेज हुकूमत के दौरान शासक वर्ग तथा उनके संरक्षण में साहूकार आदि बहुत ही निर्दयता से लोगों की हत्या कर दिया करते थे, जिसकी वजह से मुण्डा जाति ने जमींदार और साहूकारों के विरुद्ध अपना विद्रोह शुरू कर दिया था। इसके अलावा उरांव जनजाति ने भी अपने बागी तेवर अपना लिए थे।

बुधु भगत बचपन से ही जमींदारों और अंग्रेजी सेना की निर्दयता को देखते आ रहे थे, जिसकी वजह से बुधु भगत कोयल नदी के पास बैठकर घण्टों तक अंग्रेजों और जमींदारों को भगाने के बारे में सोचते रहते थे। बुधु भगत को देवदूत समझ कर आदिवासियों ने उनको अन्याय के विरुद्ध लड़ने के लिए आह्वान किया, और सभी लोग उनके साथ तीर, धनुष, तलवार, कुल्हाड़ी इत्यादि लेकर खड़े हो गए। इस दौरान कैप्टन द्वारा बन्दी बनाए गए सैकड़ों ग्रामीणों को उन्होंने लड़कर छुड़वा लिया और इसके अलावा बुधु भगत ने गुरिल्ला युद्ध के लिए अपने दस्ते को प्रशिक्षित किया।

आदिवासियों के सभी नेताओं में बुधू भगत सबसे श्रेष्ठ एव शीर्षस्थ थे। वे छोटा नागपुर के प्रथम क्रान्तिकारी थे जिन्हें पकड़ने के लिए अंग्रेजों ने १००० रुपये के पुरस्कार की घोषणा की थी, परन्तु कोई भी इस पुरस्कार के लालच में आकर उन्हें पकड़वाने को तैयार नहीं था। आपने १८२८-३२ केला के विद्रोह में अपने नेतृत्व का परिचय दिया था। यह विद्रोह अंग्रेजी हुकूमत और शोषण व अत्याचार के विरुद्ध किया गया पहले स्वतंत्रता आन्दोलन का हिस्सा था। इस विद्रोह के बाद अंग्रेजों को घुटने टेक देने पड़े ।

१३ फरवरी १८३२ में बुधू अपने साथियों के साथ कैप्टन एमपी के द्वारा सिलागांई गाँव में घेर लिए गए। उस समय बुधु आत्मसमर्पण करना चाहते थे जिससे कि निर्दोष लोगों की जानें ना जाएँ। लेकिन बुधू के सभी भक्त उनके चारों ओर घेरा डालकर खड़े हो गए। कैप्टन की चेतावनी के अनुसार वहाँ पर अंधाधुंध गोलियाँ चला दीं, जिसकी वजह से करीबन ३०० से अधिक ग्रामीण मारे गए। इसके साथ बुधु भगत और उनके बेटे हलधर और गिरधर भी अंग्रेजों के साथ लड़ाई करते हुए शहीद हो गए।

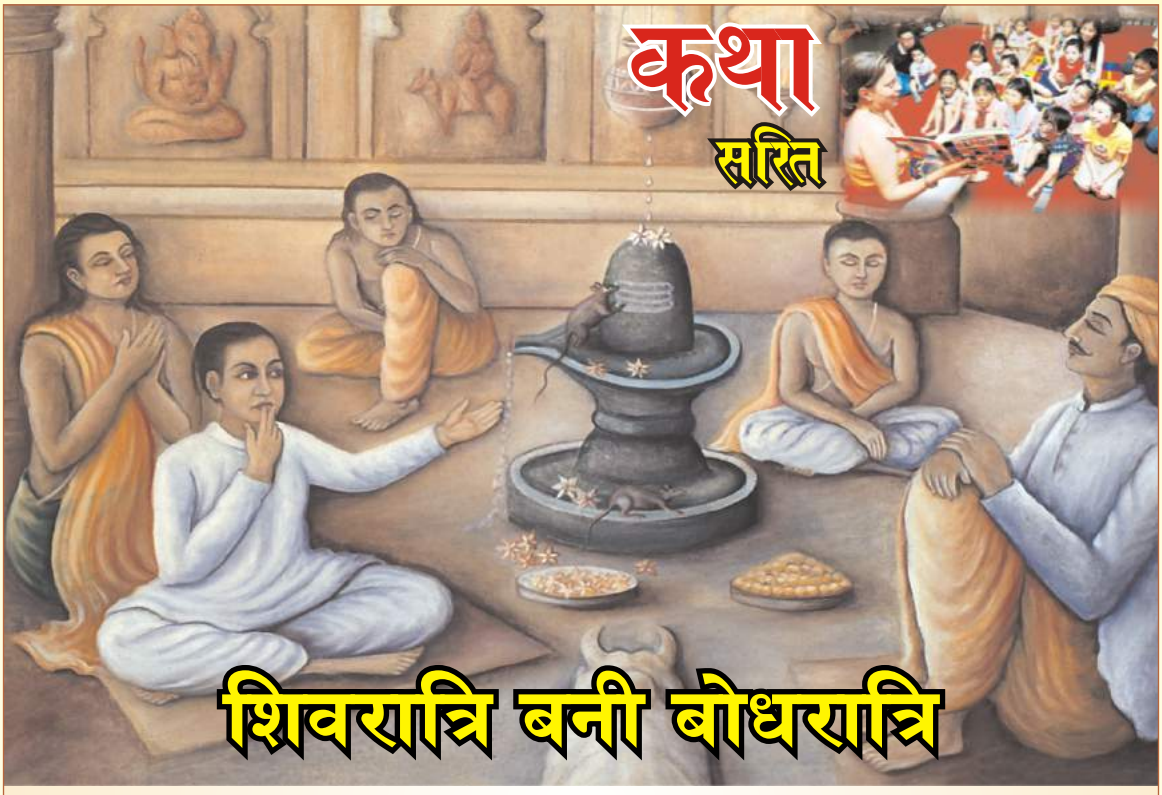

शिवरात्रि बनी बोधरात्रि

बात १९वीं शताब्दी के तीसरे-चौथे दशक की है। गुजरात में मोरवी राज्य में एक ग्राम है टंकारा। टंकारा के बहुत बड़े जमींदार करसन जी तिवारी थे। घर में खूब धनधान्य था। किसी चीज की कमी नहीं थी।

सन १८२५ में इनके घर में एक तेजस्वी बालक ने जन्म लिया। जिसका नाम मूल शंकर रखा गया। मूल शंकर बचपन से ही बड़े कुशाग्र बुद्धि के थे। क्योंकि पिताजी पक्के शिव भक्त थे इसलिए बचपन से ही शिवजी के पराक्रम तथा उनसे सम्बन्धित अलौकिक कथाओं को मूलजी अपने पिताजी से सुनते रहते थे और इसी कारण से उनके चित्त पर भी शिवजी के प्रति गहरा अनुराग अंकित हो गया था। बालक मूलजी के चेहरे पर कुछ इस प्रकार की आभा थी कि कोई भी उनको देखता था तो सम्मोहित हो जाता था। लगता था जैसे वे सारे गाँव के दुलारे हों। गाँव में प्रतिवर्ष शिवरात्रि के दिन शिव मंदिर में विशेष पूजा का कार्यक्रम होता था।

जब मूलजी १४ वर्ष के हो गए तब पिताजी ने उनको भी कहा कि पुत्र! इस बार शिवरात्रि पर तुम भी व्रत रखना और मन्दिर में चल करके पूजा पाठ भी करना। मूल जी प्रसन्न हो गए। प्रातः से ही उत्साहित थे कि आज उनको शिवजी के दर्शन होंगे। वे बड़े भक्ति भाव से निराहार रहकर के शिवजी के मन्दिर में पहुँच गये। मन्दिर में पुजारी तो थे ही, पिता के अतिरिक्त अन्य अनेक भक्तगण थे। पूजा-पाठ जोरों से चल रहा था। मूलजी एक कोने में बैठ करके ध्यान से शिवजी को देखे जा रहे थे। उनके मन में श्रद्धा का ज्वार उमड़ घुमड़ कर उठ रहा था। जैसे-जैसे समय बीता भक्तगण सोने लग गए। यहाँ तक कि मूलजी के पिताजी और पुजारी भी सो गए। परन्तु मूलजी अटल बैठे हुए एक टक शिवजी की मूर्ति की ओर देख रहे थे कि अभी शिवजी का साक्षात् होगा। परन्तु ऐसा हुआ नहीं। इसके बदले हुआ क्या? कुछ चूहे आए और शिवजी की प्रतिमा पर चढ़ गए और उस पर जो प्रसाद चढ़ा हुआ था उसको खाने लगे। यह देख कर १४ वर्षीय मूलशंकर के मन में तूफान मचलने लगा। अनेक प्रश्न उनके मन में उठने लगे कि पिताजी ने तो कहा था कि शिवजी पूरे

संसार के पालक हैं, सब की रक्षा करने वाले हैं, अत्यन्त शक्तिशाली हैं। परन्तु यह क्या? यह तो अपने ऊपर चढ़े हुए चूहों को भी नहीं हटा पा रहे! जब इस प्रश्न का उत्तर स्वयं मूलजी नहीं खोज सके तो उन्होंने पिताजी को तुरन्त जगाया और यही प्रश्न उनसे किया।

पिताजी ने पहले तो उन्हें समझाने का प्रयास किया कि धार्मिक मामलों में ऐसे प्रश्न अनुचित हैं, ईश्वर नाराज हो जाते हैं। परन्तु मूलजी को संतोष नहीं हुआ तो पिताजी ने अन्ततोगत्वा यह कह दिया कि यह तो शिवजी के प्रतीक हैं। वास्तविक शिवजी तो कैलाश पर्वत पर रहते हैं। बालक मूल शंकर ने पिताजी से तुरन्त मन्दिर से घर जाने की अनुमति माँगी और कहा कि अब मैं सच्चे शिव को ही खोज लूँगा। पत्थर के बने हुए शिवजी में उनकी आस्था उसी क्षण से समाप्त हो गई।

लगभग २०० वर्ष पूर्व की इस शिवरात्रि ने एक ऐसे महापुरुष स्वामी दयानन्द जी को जन्म दिया जिसने देश भर में छाए पाखण्ड और अंधविश्वास के विरुद्ध एक युद्ध छेड़ दिया और अत्यन्त सफलतापूर्वक सत्य सिद्धान्तों का स्थापन किया।

इस घटना से यह शिक्षा मिलती है कि मनुष्य को केवल किसी बात को इसलिए नहीं मान लेना चाहिए कि परम्परागत रूप से ऐसा ही चलता आ रहा है बल्कि क्योंकि परमात्मा ने उसे बुद्धि दी है, विवेक दिया है, इसलिए विवेक के अनुसार विचार करके सत्य का निर्णय अवश्य करना चाहिए। यही मनुष्यत्व है, यही मनुष्य का कर्तव्य है।

प्रस्तुति- नवनीत आर्य
नवलखा महल, उदयपुर

पूरा नाम–
चलभाष–

सत्यार्थप्रकाश पहेली- ११/२२

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या–

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। (त्रयोदश समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

१	इ १	१		२ स	२		३	सा ३	३
	४ स	४	स ४	४		५	ति ५	५	
६	६	ल ६		७	७ षि	७		८ अ	८

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. बाइबल के ईश्वर ने तू क्यूँ क्रुद्ध है और तेरा मुँह क्यूँ फूल गया यह शब्द किसको कहे?
२. बाइबल के अनुसार बाइबल के परमेश्वर ने किससे भेंट की और वह गर्भिणी हुई?
३. सत्यार्थ प्रकाश के त्रयोदश समुल्लास में किसके विषय में बताया गया है?
४. मनुष्य का आत्मा यथायोग्य किसके निणर्य करने का सामर्थ्य रखता है?
५. विद्वान् की बात और......... स्थिर होती है?
६. काइन के भाई का क्या नाम था?
७. मृतक शरीर को गाड़ना आदि सर्वथा .... है?
८. जो जलना है वह सर्वोत्तम है, क्योंकि उसके सब पदार्थ....... होकर वायु में उड़ जायेंगे?

''विस्तृत नियम पृष्ठ १७ पर पढ़ें एवं ₹५१०० पुरस्कार प्राप्त करें।''

कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ मार्च २०२३

अमस्थावलेह

कोरोना महामारी ने पूरी दुनिया में जमकर कहर बरपाया है। कई देशों में तो कोरोना के मामले अभी भी बड़ी संख्या में सामने आ रहे हैं। दुनियाभर में कोरोना की वजह से लाखों लोगों को अपनी जान गंवानी पड़ी है। कोविड वायरस का सबसे ज्यादा असर मरीज के फेफड़ों पर देखा गया है। हाल ही में यूएस में हुई एक स्टडी में ये बात सामने आई है कि कोरोना से पीड़ित मरीजों में से अस्पताल में भर्ती होने की स्थिति वाले लगभग ११ प्रतिशत मरीजों के फेफड़े डैमेज हुए थे और उनमें घाव मिले थे। स्टडी के मुताबिक ये इर्रिवसेबल होने के साथ ही समय के साथ और भी खराब हालत में पहुँच सकते हैं।

कोविड-१९ मरीजों को लेकर की गई ये स्टडी अमेरिकन जरनल ऑफ रेस्पिरेटरी एंड क्रिटिकल केयर मेडिसिन में पब्लिश हुई है। स्टडी में कहा गया है कि- 'कोविड मरीज जिनमें अलग-अलग स्थिति में बीमारी की गम्भीरता पाई गई थी और उनमें फाइब्रोटिक लंग डैमेज पाया गया था, मरीजों में लम्बे समय तक सांस लेने में दिक्कत और सांस फूलने जैसी समस्याएँ देखी गई हैं।'

ऐसा माना जाता है कि कोविड के कारण क्षतिग्रस्त फेफड़ों को एलोपैथी से दोबारा स्वस्थ नहीं किया जा सकता है। **वहीं आयुर्वेद व योग को क्षतिग्रस्त फेफड़ों व अन्य अंगों को दोबारा स्वस्थ करने के लिए उत्तम चिकित्सा पद्धति माना जाता है।**

कोरोना के पश्चात् यह देखा गया है कि अनेक रोगियों में स्वास्थ्य सम्बन्धी बीमारी बढ़ गई हैं। सीने में जकड़न, श्वास लेने में तकलीफ इत्यादि लक्षण प्रायः देखे जाते हैं। **प्राणायाम फेफड़ों की ताकत बढ़ाने का सबसे कारगर उपाय है।** परन्तु आयुर्वेदिक दवा की बात करें तो **अमस्थावलेह** जो कि एक इम्यूनिटी बूस्टर के साथ फेफड़ों का एकमात्र टॉनिक भी माना जाता है, उसको सुबह-शाम अदरक वाले दूध के साथ सेवन करना लाभदायक माना गया है। वासा, कंटकारी, यष्टिमधु, दशमूल, भृंग, पुष्करमूल, कचूर, बहेड़ा, हल्दी, चित्रक, गाजबान, गिलोय, लिसोड़ा, तुलसी, मुस्तक, बबूलछाल, काकड़ासिंगी, सोंठ, मरीच, पीपली, रुदन्ति, दालचीनी, लौंग, इलायची, तेजपत्ता, केसर, आमला पिष्टी और शीशम का तेल मिलाकर अमस्थावलेह को तैयार किया जाता है। इस प्रकार अमास्थावलेह आपको ३० से अधिक जड़ी बूटियों के साथ प्रदान किया गया श्वसन कायाकल्प है।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि फेफड़ों को मजबूत करने के लिए और शरीर की इम्यूनिटी बढ़ाने के लिए **अमस्थावलेह** का प्रयोग यद्यपि निरापद रूप से किया जा सकता है **फिर भी कुशल वैद्य के द्वारा राय लेकर इसका प्रयोग किया जाना उचित होगा।**

यह जानकारी हमने इण्टरनेट पर उपलब्ध सामग्री के आधार पर पाठकों के लिए दी है।

प्रस्तुति- श्रीमती दुर्गा गोरमात

समाचार

फरीदाबाद में देवयज्ञ- आध्यात्मिक सत्संग का आयोजन

ब्र. राजेन्द्रार्यः द्वारा दिनांक १८ दिसम्बर २०२२ रविवार तदनुसार पौष कृष्ण दशमी संवत् २०७९ विक्रमी को हर्षोल्लास पूर्ण वातावरण में वेद एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती के सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार के लिए बी.पी.टी.पी., ए- ब्लॉक पार्क, सैक्टर ८५, फरीदाबाद में देवयज्ञ, आध्यात्मिक सत्संग एवं प्रीतिभोज का आयोजन किया गया। जिसके ब्रह्मा आचार्य डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री जी (अमेठी) थे। गुरुकुल आर्ष कन्या विद्यापीठ नजीबाबाद की स्नातिका आचार्या सुलभा शास्त्री (हापुड़) ने वेदपाठ किया। इस अवसर पर पं. कंचन कुमार जी (दिल्ली) एवं उनके साथी (आस्था चैनल वाले) के सुमधुर भजन हुए। श्रद्धेय डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री जी ने वेद, धर्म, ऋषि दयानन्द सरस्वती आदि विषयों पर श्रद्धापरक ओजस्वी प्रवचन दिया। पूज्या माता विमला ग्रोवर प्रधाना- महिला आर्य समाज सैक्टर- १९, फरीदाबाद का सम्मान किया गया। इस अवसर पर मान्य डॉ. गजराज सिंह आर्य- प्रधान एवं अन्य गणमान्य आर्यजन उपस्थित रहे। सम्पूर्ण कार्यक्रम को सोशल मीडिया प्रभारी मान्य श्री कैलाश चन्द्र आर्य, जोधपुर ने यू-ट्यूब पर लाइव प्रसारित किया।

२१ कुण्डीय दिव्य यज्ञ का उदयपुर में आयोजन

प्रतिदिन पंचमहायज्ञों का करना गृहस्थ का परम कर्तव्य ऋषियों ने बताया। यज्ञ, दान से जुड़े रहकर अपने जीवन के परम लक्ष्य मोक्ष की ओर गति करना उत्तरायण (उच्चतर) की ओर गति है। धार्मिक आध्यात्मिक यज्ञ एवं वेद ज्ञान से जीवन में प्रकाश बढ़ता और अंधकार कम होता है ये विचार वैदिक संस्कृति प्रचार संघ उदयपुर द्वारा आयोजित २१ कुण्डीय दिव्ययज्ञ में मुख्य वक्ता

विद्वान् आचार्य अवनीश मैत्रिः ने कहे।

वैदिक संस्कृति प्रचार संघ उदयपुर ने आलोक स्कूल स्थित सेक्टर-११ के राम मंदिर परिसर में मकर सौर संक्रान्ति पर्व विशेष पर २१ कुण्डीय दिव्य यज्ञ एवं सत्संग का आयोजन किया। जिसमें यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य श्री शिव प्रकाश सिद्धान्त शास्त्री रहे। सकल आर्य समाज, उदयपुर के समायोजन में आयोजित इस कार्यक्रम में श्री प्रेमचन्द गुप्त ने कहा वेदों के पढ़ने और यज्ञ करने से मनुष्य मोक्ष अधिकारी बनता है, महर्षि दयानन्द सरस्वती ने हमें पुनः यज्ञ एवं वेदों की मुख्य धारा से जोड़कर अनन्त उपकार किया है।

समस्त कार्यक्रम का संचालन एवं नेतृत्व संरक्षक श्री प्रकाशचन्द्र श्रीमाली ने किया। अन्य संयोजक सहयोगी श्रीमती सरला एवं राजकुमार गुप्ता, सत्यप्रिय तथा भूपेन्द्र शर्मा रहे। इस कार्यक्रम में श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के अध्यक्ष श्री अशोक आर्य सहित सभी समाजों के पदाधिकारी श्री अमृत लाल तापड़िया, शारदा माता, भँवर लाला गर्ग, श्याम दीक्षित, यशवन्त श्रीमाली, विनोद राठौर, हेमांग जोशी, मलकानी जी, जिग्नेश आदि गणमान्य लोगों ने भाग लिया। मुख्य यजमान श्री वीरेन्द्र शर्मा एवं श्री देवराज जी रहे।

राजस्थान के पूर्व लोकायुक्त श्रीमान् सज्जन सिंह जी कोठारी के सुपुत्र का शुभ विवाह सम्पन्न

ईश्वर की असीम अनुकम्पा से दिनांक २५ दिसम्बर २०२२ के शुभ दिन सम्पूर्ण आर्य जगत् की मान्य विभूति, राजस्थान के पूर्व लोकायुक्त, इस न्यासी के न्यासी, न्यायाधिपति श्रीमान् सज्जन सिंह जी कोठारी के सुपुत्र चि. अर्पित कोठारी का शुभ विवाह सौ. का. ग्रेजिया के साथ उल्लासपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। न्यास व सत्यार्थ प्रकाश परिवार की ओर से कोठारी परिवार को बहुत-बहुत बधाई। नव गृहस्थ के प्रति शत्-शत् शुभकामनाएँ।

सिलाई कक्ष का लोकार्पण

महर्षि दयानन्द कन्या विद्यालय, हिरणमगरी सेक्टर-४ में छात्राओं के उपयोग के लिए एक सिलाई कक्ष की आवश्यकता अनुभव की जा रही थी। श्री अंबालाल जी सनाढ्य ने इस आवश्यकता को अनुभव करते हुए सिलाई कक्ष अपनी ओर से बनवाया। जिसका

लोकार्पण दिनांक १४ जनवरी २०२३ को श्रीमती शारदा जी गुप्ता, संरक्षक-आर्य समाज के द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम में श्री अम्बालाल सनाढ्य के परिवारीजन एवं श्री अमृतलाल जी तापड़िया, श्री भँवरलाल आर्य, श्री के.के. सोनी, डॉ वेदमित्र आर्य, श्री राम दयाल मेहरा, श्री हजारी लाल आर्य, श्रीमती सरला गुप्ता आदि अनेक आर्यजनों की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। श्री सनाढ्य को आर्य समाज की ओर से बहुत-बहुत साधुवाद।

CARRY ON MISSY
Dollar
Missy
CHIC CASUALS
CHURIDAR | ANKLE LENGTH | CAPRI
Chitrangada Singh
Over 85 shades
| www.dollarglobal.in | Buy Online: www.dollarshoppe.in | Also available at all leading shopping portals
Dollar products are available in over 800 cities/towns and 100,000 MBOs across India | Govt. Certified STAR EXPORT HOUSE

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 February-2023 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2021-2023

स्त्री को योग्य है कि अतिप्रसन्नता से घर के कामों में चतुराईयुक्त, सब पदार्थों के उत्तम संस्कार, घर की शुद्धि रखे और व्यय में अत्यन्त उदार सदा न रहै अर्थात् सब चीजें पवित्र और पाक इस प्रकार बनावे जो औषधरूप होकर शरीर वा आत्मा में रोग को न आने देवे।

सत्यार्थ प्रकाश, चतुर्थ समुल्लास पृष्ठ ९६

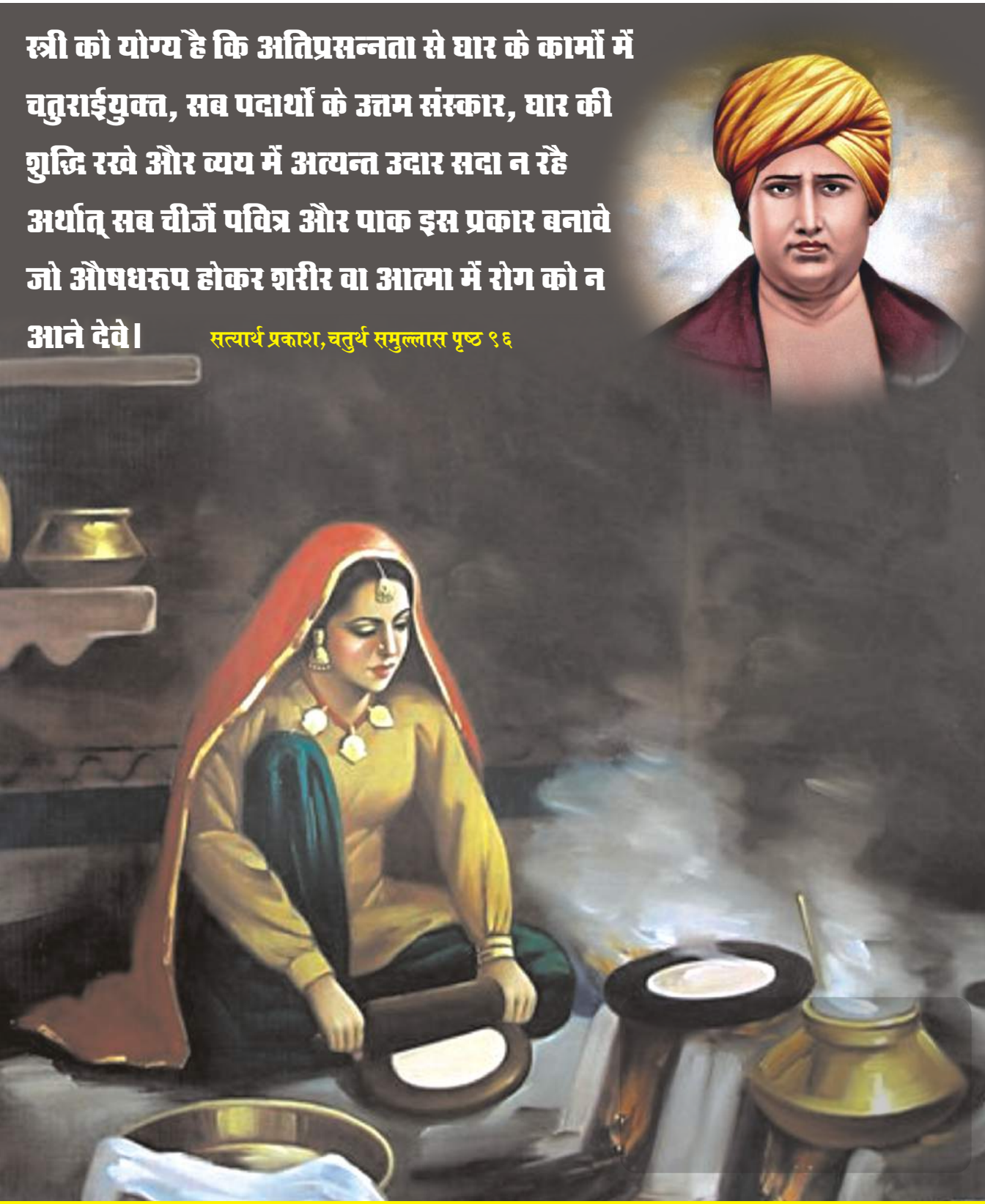

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य
मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर